Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

दीन बन्धु सर छोटूराम

वर्ष 20 अंक 05 30 मई, 2020 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

कोरोना वायरसः मुश्किल दौर में हम, हमारी दुनिया और प्रशासन

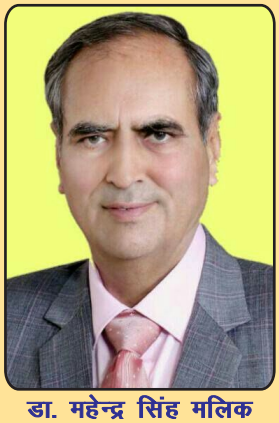

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

करीब पांच महीने पहले चीन के वुहान में एक वायरस सामने आया था, जिसे समस्त विश्व में कोरोना वायरस के नाम से जाना जाता है और इस बिमारी को कोविड–19 नाम दिया है। पिछले पांच महीनों से दुनिया का हर छोटा–बड़ा मुल्क इससे लड़ रहा है। हर रोज लोग मर रहे हैं, संक्रमित हो रहे हैं। कोविड–19 एक भयानक महामारी सिद्ध हो चुकी है। इस समय लॉकडाऊन 3.0 के अन्त तक विश्व भर में 4769643 व्यक्ति इस महामारी की चपेट में आ चुके है। इसी प्रकार एक महामारी ने वर्ष 1918 में भी समस्त विश्व में भयानक प्रकोप फैलाया था जिससे भारत वर्ष में **"कार्तिक की बिमारी"** व विश्व में **"स्पेनिस फ्लू"** के नाम से जाना जाता है। उस समय ग्रामीण भारत में इस बिमारी का इतना अधिक प्रकोप था कि एक व्यक्ति का संस्कार करके आते तो दूसरा शव तैयार मिलता था। इस बिमारी से गाँव के गाँव खाली हो गये थे और शवो के संस्कार के लिये ईंधन की भी कमी हो गई थी।

भारत में 20 मई तक इस बीमारी से 3301 लोगों की मौत हो चुकी है और कुल संक्रमितों का आंकड़ा एक लाख को पार कर गया है जो शुरूआत के समय 536 था। भारत में कोरोना वायरस का पहला केस 30 जनवरी को रिपोर्ट हुआ था। वुहान से लौटा एक छात्र कोरोना पॉजिटिव पाया गया था उसके बाद दो और मामले केरल में ही सामने आए थे। केरल की मौजूदा स्थिति पर नजर डाले तो यहां अब सिर्फ 16 एक्टिव मामले ही रह गए हैं लेकिन अब ये पूरे देश में फैल चुका है। इस समय भारत विश्व के कोरोना से सबसे अधिक प्रभावित 11 देशों में शामिल हो गया है। राष्ट्र के 23 राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों में कोरोना फैल चुका है। इस कोरोना वायरस से निपटने का केवल लॉकडाऊन ही एक इलाज माना जा रहा है।

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 24 मार्च को 21 दिनों के लिए पूरे देश को लॉकडाऊन रहने का आदेश दिया। इस निर्णय से पहले 22 मार्च को 14 घंटों का जनता कर्फ्यू लगाया गया। 14 अप्रैल सुबह 10 बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को फिर से संबोधित करते हुए लॉकडाऊन की अवधि बढ़ाकर 3 मई करने का फैसला लिया। कुछ राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों में तो कर्फ्यु भी लगाया गया। इस दौरान 12 मई को प्रधानमंत्री ने राष्ट्र को संबोधन के दौरान 20 लाख करोड़ के राहत कार्य पैकेज की घोषणा की जिससे लंबे लॉकडाऊन के कारण हुए राष्ट्र के वित्तीय घाटे को देखते हुए इस पैकेज से राहत की बहुत कम उम्मीद है। अब भारत में लॉकडाऊन को कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए कुछ ढ़ील देते हुये 31 मई तक बढ़ा दिया गया।

हरियाणा में 17 मार्च को कोरोना का पहला केस आया था। आज हरियाणा के सभी 22 जिले कोरोना की चपेट में आ चुके हैं और लाक डाउन–3 के बाद तीव्र गति से प्रदेश में कोरोना के मरीज बढ़ रहे हैं। हरियाणा में कुल मरीजों का आंकड़ा 971 पहुंच गया है। इस समय प्रदेश में राजधानी दिल्ली से सटे 5 जिलों – गुरूग्राम, फरीदाबाद, सोनीपत, झज्जर और नूंह में ही 602 कोरोना संक्रमित मरीज मौजूद है। कोरोना वायरस को लेकर डर इतना व्याप्त है कि कोरोना से जान गंवाने वाली पानीपत की 20 साल की युवती का अंतिम संस्कार भी खानपुर के डॉक्टरों को कराना पड़ा, क्योंकि परिजनों ने शव लेने से ही इनकार कर दिया था। इस भयानक महामारी ने आम आदमी को इतना भयग्रस्त व संवेदनहीन कर दिया है कि आज खून का रिश्ता भी कोरोना के पीड़ित का दाह संस्कार करने से मना कर देता है और अनेक स्थानों पर स्वास्थ्य कर्मी के प्रशासन के अधिकारी शव को अग्नि देते हैं। यहां तक की कोरोना मरीजों का उपचार करने वाले डाक्टरों व सरकारी कर्मचारियों को लोग हीनभावना से देखने लगी है और मकान मालिक ऐसे कर्मचारियों से मकान खाली करवाने लगे है। भारत में हालाकिं इस महामारी के कारण मृत्युदर 3 प्रतिशत से भी कम है लेकिन इस भयानक रोग ने आम आदमी को मानसिक तौर से जकड़कर भयभीत कर दिया है और आगामी समय में यह महामारी ओर अधिक संकटकारी व तनावग्रस्त सिद्ध हो सकती है।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

कोरोना महामारी की रोकथाम के लिए लगाए गए लॉकडाऊन व कर्फ्यू ज्यादा कारगर साबित नहीं हुए। दिल्ली जैसे महानगरों में इस महामारी का मुख्य पोषक तबलीकी जमात पर समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया। इस जमात के करीब 2500 संक्रमित व्यक्ति अन्य राज्यों में प्रवेश कर गए और उनके संपर्क में आए अन्य लोगों से भी संक्रमण बढता रहा। लॉकडाऊन खोलने के बाद जनता में अफरा–तफरी मचनी शुरू हो गई। आम आदमी सामाजिक दूरी व अन्य सरकारी निर्देशों की परवाह किए बिना अपने दैनिक कार्यो के लिए बाहर जाने लगा जिससे अव्यवस्था का माहौल बनता रहा। लॉकडाऊन के कारण हुई शराब बंदी से राष्ट्र को भारी वित्तीय घाटा हुआ। एक अनुमान के अनुसार 40 दिनों के लाक डाउन में राष्ट्र को केवल शराब बंदी से लगभग 28 हजार करोड़ का राजस्व नुकसान हुआ। शराब बंदी खुलने के बाद ठेकों पर लगी भीड़ को नियंत्रण करने व उचित शारीरिक दूरी बनाए रखने में प्रशासन व पुलिस व्यवस्था काफी लाचार रही। यही नहीं शराब बंदी के दौरान अफरा–तफरी के माहौल में शराब माफियों द्वारा हरियाणा प्रदेश में 4 करोड़ से अधिक की शराब अवैध तौर से बेच दी गई। यह आबकारी एवं कराधान विभाग द्वारा बनाए गए शराब के गोदामों से प्रभावशाली व्यक्तियों एवं विभागीय अधिकारियों की मिलीभगत से बेची गई। इस संदर्भ में पुलिस द्वारा दर्ज मुकदमे में हरियाणा के एक पूर्व विधायक सहित कुछ लोगों को गिरतार भी किया जा चुका है।

पुलिस व प्रशासन की सबसे अधिक दुर्दशा देशभर में रोजी रोटी के जुगाड़ में फैले लगभग 40 करोड़ प्रवासी मजदूरों की सुरक्षा व नियंत्रण करने में हुई है। लॉकडाऊन शुरू होते ही ये मजदूर अपना रोजगार बंद होने व भय के कारण पैदल ही अपने निवास की ओर असुरक्षित माहौल में अपने परिवारों सहित निकल पड़े। करीब 150 श्रमिक तो भुख व रेल तथा सड़क हादसों से रास्ते में अपनी जान गवां बैठे। काफी दिनों तक हजारों श्रमिकों व दैनिक वेतन भोगियों के सड़कों पर भटकने के बाद प्रशासन द्वारा इनके लिए शैल्टर होम का खानपान की व्यवस्था की गई जो कि श्रमिकों की लगातार नफरी बढ़ने से अपर्याप्त रही। इस पुनित कार्य के लिए समाज सेवी संस्थाओं जनता विशेषकर राधा स्वामी डेरा ब्यास धार्मिक संस्था का विशेष योगदान रहा है।

लॉकडाऊन खुलने के बाद भी इन प्रवासी मजदूरों का सड़कों व रेलवे स्टेशनों पर जमावड़ा बढ़ता गया। रोजगार बंद होने व असुरक्षित सामाजिक माहौल के कारण हजारों श्रमिक अपने मूल राज्यों में जाने के लिए इकट्ठे होते रहे और अनेक स्थानों पर पुलिस व श्रमिकों में टकराव भी हुआ। महाराष्ट्र में थककर रेलवे लाईन पर सो रहे 16 मजदूर मालगाड़ी के नीचे कटकर मारे गए और 50 से अधिक श्रमिक रोड़ हादसों में मारे जा चुके है। राह चलते हुए एक महिला प्रवासी मजदूर को प्रसव पीड़ा हुई और उसने सड़क किनारे ही बच्चे को जन्म दिया व फिर उठकर 160 किलोमीटर दूर अपने निवास स्थान की ओर पैदल चल पड़ी । इन हालातों से स्पष्ट है कि राष्ट्र के औद्योगिक विकास के सतम्भ माने जाने वाले श्रमिक वर्ग की सुरक्षा के लिए प्रशासन कितना जागरूक है। अभी भी राष्ट्रभर में हजारों श्रमिक अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचने के लिए सड़कों पर भटक रहे हैं। प्रवासी श्रमिक अपनी जान तक की परवाह किए बगैर यमुना के गहरे पानी से होकर अपने गृह राज्य उत्तर प्रदेश में प्रवेश करने को मजबूर हैं। हालांकि प्रशासन द्वारा हर राज्य में रेल यातायात व बस सेवाएं इन प्रवासी श्रमिकों को उनके राज्य में पहुंचाने के लिए लगाई गई हैं लेकिन हालात सुरक्षित होने में समय लगेगा। इस महामारी के खौफ से आम आदमी को नैतिक शक्ति प्रदान करने वाले देवी–देवताओं के द्वार व धार्मिक स्थान–मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे आदि भी बन्द कर दिये गये है। अतिथियों की ताजपोशी, आदर–सत्कार हेतू आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम व सामाजिक समारोह भी बन्द कर दिये गये। एक अनुमान के अनुसार लॉकडाऊन के कारण लगभग 60 हजार शादी–विवाह व सामाजिक समारोह रद्द कर दिये गये जिससे इस व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों को आर्थिक नुकसान के साथ मानसिकतौर से परेशानी झेलनी पड़ी। देश के कई राज्यों में कई पुलिस अधिकारी व स्वास्थ्यकर्मी अपनी ड्यूटी के दौरान इस महामारी में अपनी जान गवा बैठे। अनेको जगहों पर सामाजिक अव्यवस्था के कारण कोरोना संक्रमितों व जनता द्वारा पुलिस व स्वास्थ्य कर्मचारियों के मारपीट की वारदात भी हुई हैं। काफी कर्मचारी ड्यूटी के दौरान कोरोना मरीजों की सुरक्षा व बचाव करते हुये स्वयं इस बिमारी का शिकार हो गये। इसलिए महामारी के इस संकट में पुलिस व स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा कोरोना मरीजों व संक्रमितों के प्रति संवेदनशील व सतर्क रहने की जरूरत है। इसके साथ ही विश्व स्तर की इस महामारी के दौर में विदेशों व अन्य राज्यों में फंसे नागरिकों एवं विद्यार्थियों सहित लगभग 3 लाख व्यक्तियों को भी वापिस लाने हेतू उचित व सम्मानजनक व्यवस्था की जानी चाहिए।

कोरोना के मरीजों व संक्रमितों के मामले तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। इसके साथ ही लॉकडाऊन में ढील होने पर सार्वजनिक प्रशासन व स्वास्थ्य सेवा तंत्र भी धीमा पड़ता नजर आ रहा है। अनेक स्थानों पर पी.पी.ई. किट व अन्य स्वास्थ्य उपकरणों का पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध ना होने के शिकायतें भी कर्मचारियों द्वारा की जा रही हैं। इसलिए जनता में पर्याप्त जागरूकता, शारीरिक दूरी की पालना व पुलिस–स्वास्थ्य सेवाओं में उचित तालमेल बरकरार रखना बहुत जरूरी है।

हमारे देश में समय रहते लॉकडाऊन किया गया लेकिन फिर भी कोरोना वायरस के हॉट स्पॉट यहां तेजी से बने। हॉटस्पॉट वो क्षेत्र हैं जहां अचानक से कोरोना के केस बढते हैं तो उस पूरे जिले को सील करने की बजाय उस क्षेत्र विशेष को हॉटस्पॉट घोषित कर ईलाज किया जाता है। दिल्ली, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात तथा तामिलनाडू जैसे राज्यों से कोरोना के सबसे ज्यादा मामले सामने आ रहे हैं। दिल्ली में निजामुद्दीन, दिलशाद गार्डन, नोएडा, मेरठ, भीलवाड़ा, अहमदाबाद, मुंबई, पुणे, कासरगोड और पथानामथिट्टा हॉटस्पॉट के मुख्य इलाके है।

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

कोरोना को ठीक करने की अभी तक कोई दवाई नहीं बनी है। भारत के बारे में तो अब नई बुरी खबर ये आ रही है कि कोरोना का कहर जून–जुलाई में शायद यहां सबसे ज्यादा टूटेगा। क्योंकि तब मानसून आ चुका होगा और मानसून वायरस फैलाने में काफी मददगार होता है। कोरोना की दवा के लिए सभी देशों में प्रयास चल रहे हैं लेकिन सबसे अधिक प्रयास इजराईल, ब्रिटेन, इटली, चीन, जापान, स्पेन, जर्मनी, भारत और अमेरिका में ही किये जा रहे हैं। इजराईल ने दावा किया है कि उसने फिलहाल वैक्सीन से भी ज्यादा कारगर एंटीबॉडी बना ली है। जब तक ये दवा बाजार में नहीं आती है तब तक कोरोना वायरस की बिमारी के साथ ही जीने की आदत डालने की जरूरत रहेगी।

भारत में अर्थव्यवस्था पर कारोना वायरस का काफी प्रभाव पड़ा है। केंद्रीय वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने एक दिन प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि "कोई भी भूखा न रहे सरकार इसका प्रयास कर रही है." लेकिन जिन कतारों में आलम, जैसे लोग खड़े हैं वो बहुत लंबी हैं और खाद्य सामग्री पर्याप्त नहीं है। इससे असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले 40 करोड़ मजदूरों का काम भी छिन सकता है। आई.एल.ओ. की रिपोर्ट में कहा गया है कि लॉकडाऊन की वजह से मेट्रो और बड़े औद्योगिक शहरों में रहकर रोज कमाने–खाने वालों को अपने गांव लौटना पड़ा है। वहीं, कारोबारी गतिविधियां भी पूरी तरह से ठप हो गई हैं। इससे भविष्य में भी उनको लौटने पर काम मिलना आसान नहीं होगा और भारत ऐसे हालात से निपटने के लिए तैयार नहीं है। कोरोना वायरस के भारत में पहुंचने से पहले ही देश की अर्थव्यवस्था की हालत चिंताजनक थी। भारत की विकास दर बीते साल 4.7 फीसदी रही जोकि यह छह सालों में विकास दर का सबसे निचला स्तर था। साल 2019 में भारत में बेरोजगारी 45 सालों के सबसे अधिकतम स्तर पर थी और पिछले साल के अंत में देश के आठ प्रमुख क्षेत्रों से औद्योगिक उत्पादन 5.2 फीसदी तक गिर गया। जोकि बीते 14 वर्षों में सबसे खराब स्थिति थी।

सरकार ने राहत पैकेज में किसानों के लिए अलग से घोषणा की है। सरकार अप्रैल से तीन महीने तक किसानों के खातों में हर महीने 2000 रुपये डालेगी। इस क्षेत्र के विशेषज्ञों का कहना है कि दो हजार रुपये की मदद पर्याप्त नहीं है क्योंकि निर्यात ठप हो चुका है, शहरी क्षेत्रों में कीमतें बढ़ेंगी क्योंकि मांग बढ़ रही है और ग्रामीण क्षेत्र में कीमतें गिरेंगी। सरकार द्वारा धान की फसल पर रोक लगाकर मक्का, दालें आदि फसलें उगाने के फरमान ने किसानी समस्या को और बढ़ा दिया है। भारत जैसे देश में अधिकतर लोग गरीबी में जी रहे हैं, विशेषज्ञों का मानना है कि भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती होगी कि कठिन लॉकडाऊन की स्थिति में गांवों से खाने–पीने की ये चीजें शहरों और दुनिया के किसी भी देश तक कैसे पहुंचेंगी। अगर सप्लाई पूर्ण रूप से शुरू नहीं हुई तो खाना बर्बाद हो जाएगा और भारतीय किसानों को भारी नुकसान झेलना पड़ेगा। भारत की कुल आबादी का 68 फीसदी हिस्सा खेती पर निर्भर है और देश की अर्थव्यस्था में 256 बिलियन डॉलर का योगदान है। लाकॅडाउन से बेरोजगारी का बढना तय है और इसकी वजह से दूसरी सामाजिक समस्याएं खडी होंगी।

हरियाणा में कोरोना वायरस अभी बेकाबू की स्थिति पर नहीं है लेकिन सामाजिक रूप से एक दूसरे के साथ जुडे रहने वाले प्रदेश के लोगों के लिए सामाजिक दूरी बनाकर चलना जरूर एक बडी मुसीबत बन गया है। शहरों को छोड दें तो अगर गांवों में कोरोना पहुंचा तो हालात भयावह होते देर नहीं लगेगी। इसके लिए सभी को समझने और समझाने की जरूरत है। कोरोना वायरस में दूरियां ही भली हैं क्योंकि जान है तो जहान है। अंत में अपने आलेख में कोरोना वायरस के बचाव के मार्ग जरूर आपसे सांझा करना चाहूंगा ताकि हम सजग और सचेत रहें। आप वायरस से खुद को बचाने के साथ ही इसे फैलने से रोकने में भी मदद कर सकते हैं। इसके लिए नियमित रूप से साबुन और पानी से या अल्कोहल वाले हैंड सैनिटाइजर से 20 सेकंड तक हाथ धोएं। खांसने और छींकने के दौरान डिस्पोजेबल टिशू से या कोहनी को मोड़कर, अपनी नाक और मुंह को ढकें। जो लोग बीमार हैं उनसे (दो मीटर या छह फीट की) दूरी बनाए रखें। घर पर ही रहें और अगर आप बीमार हैं, तो खुद को परिवार के सभी लोगों से अलग कर लें। अगर आपके हाथ साफ नहीं हैं, तो अपनी आंख, नाक या मुंह को न छुएं और हमेशा मास्क लगाकर रखें। 65 वर्ष की आयु तथा मधुमेय जैसी दूसरी बिमारियों से पीड़ित लोग घर से बाहर निकलनें से परहेज करें। प्रतिदिन योगा, आवश्यकता अनुसार शारीरिक व्यायाम या घर के अन्दर ही चलते–फिरते रहें। सुबह–शाम चाय या दूध में अदरक, हल्दी तथा सौंफ का इस्तेमाल करें। दिन में दो या तीन बार कोसे पानी में नीबू डालकर पियें। उम्मीद और प्रार्थना करता हूं कि कोरोना वायरस से न केवल आप बचेंगे वहीं दूसरों को भी इस महामारी से लड़ने में आप मदद करेंगे। सामाजिक, आर्थिक और मानसिक तीनों स्तर पर ही लड़ाई चल रही है। शारीरिक रूप से भी खुद को बचाना जरूरी है। ऐसे समय में सबसे जरूरी है कि हम सब खुद को मजबूत बनाए रखें। बीमारी से बचते हुए दूसरे मोर्चो पर भी खुद को सकारात्मक रूप से सोचते हुए आगे बढ़ाते रहें। लॉकडाउन के दौरान जलाशयों विशेषतर गंगा, यमुना आदि पवित्र नदियों का पानी विषाणु रहित होकर निर्मल हो चुका है जिसको स्वच्छ व प्रदुषण रहित बनाये रखना हम सभी का नैतिक कर्तव्य है। हमें अपने कोरोना योद्धाओं विशेषतौर से पुलिस व स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभार व्यक्त करते हुये उनके शौर्य को प्रणाम करना चाहिए, जो अपनी जान जोखिम में डालते हुए हमें इस संकट के काल से निकालने के लिए दिन रात जुटे हैं।

डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक
आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति एवं
जाट सभा, चंडीगढ व पंचकुला

जिसने कभी मन नहीं जीता, वह ईश्वर की सृष्टि का रहस्य नहीं समझ सकता। –विनोबा भावे

SALUTATIONS! FROM CRIME CONTROL TO COMMUNITY POLICING

Dr. Sarita Malik, HCS

Doctrate in Police Psychology

A swift change from Crime Control to Community Policing is the new saga of Police. The biggest instigator for this change is their own humanity which was obliterated by their hard shells on account of increasing crime in every corner of India.

Police Personnel go through rigorous training of combating crime which is the prime role of Policing. As defined by Cochran & Bromley in 2003 Crime Control orientation refers to the importance police functionaries place on the law enforcement and crime and crime control functions of their jobs. The firstmost motivation for becoming police officers is a chance to fight crime.

On the Contrary Community Policing is joint effort of the citizens and Police towards solving neighbourhood problems which in turn satisfies the expressed needs of citizens and enhances the residents quality of life. Different units like women cell, child support unit, drug de-addiction programme, victim support unit, police advisory groups, neighbourhood schemes and so on are part of community policing efforts.

This time this inevitable enemy is not which can be combated through force rather it's an enemy which has thrusted itself on the society and can be dealt only with humanitarian approach of community policing.

Thus these uniformed force came in full swing with full zest and flavour of humour to ensure country-wide full Curfew and lockdown. Few of the instances which cannot be over-sighted even by ignorant are worth mentioning.

◆ Persuasion of general public by the police by singing songs for being aware of Corona lockdown and by requesting with folded hands to adhere to Government norms of curfew/lockdown. Helping citizens in all possible ways such as providing medicines, taking them to hospitals, ration distribution, distribution of cooked food packets, pizzas for children etc.

◆ Police is also performing funeral/cremation services of Covid-19 patients as family members are also afraid to go near the deceased body of their own family member.

◆ Senior citizens/lonely people/children are given special attention by surprises such as singing birthday wishes and a surprise birthday cake at their door steps.

◆ Recently, Bihar Police has also set an example by going everyday to a hospital and motivating the doctors and nurses by clapping for them.

◆ Awareness programmes of social distancing are being conducted by Chennai Police on roads by wearing virus-themed helmet and carrying a mace and shield.

◆ In these testing times police has passed the acid test by its remarkable performance and innovative ideas to handle the public at large with their both daily needs and emotional needs by ensuring that there is no shortage of essential items, medicines etc.

Police exposure to this novel challenge has brought out the humanitarian core in contrast to aggressive brutal image of Police in the past. They are also working tirelessly from handling migrants, issuing advisories, making shelter homes, counselling citizens etc.

Police is buying masks for poor from their pocket, give blood to a pregnant lady for delivery in Chennai and returning award money to the couple for diet of mother and child are signs of kindness of Khakhi.

A humorous site of police was also visible wherein Chennai Police brought a dummy Corona patient in ambulance to apprehend the violators and push them in ambulance so that in future it serves as a deterrent for violators.

◆ Although, there are mobile clinics for medical examination of police personnel at few places but these police functionaries are putting their own life as risk 24 x 7 for the citizens so that they are saved from the pandemic. Many of them sleep on benches or in their vehicles, or on the floor itself to save their families as well, from this pandemic. It is sad to acknowledge that all these Police fighters are not even provided with Personal Protector Equipment (PPE) when they deputed on hospital duties.

Amidst this, these frontline fighters are facing the challenge and recently the incident of death of Sh. Anil Kumar Kohli, ACP, Ludhiana North due to Corona brought a shockwave to the country as well as among fellow beings of Police. Police Personnel such as constables, ASI etc. deployed on Covid-19 duties face continuous threat of the virus but they do not shrink from doing their duties even if they have to lay their lives.

Shocking was the incident of chopping of hands of Sub-Inspector Harjeet Singh in an attack by curfew violators in Patiala who was just performing his duty soulfully, diligently and dedicatedly for adherence of the orders of curfew by the Government. This was a extreme kind of attack by violators and later he was admitted to PGIMS, Chandigarh for surgery.

A solidarity campaign initiative against any kind of attack of policemen, doctors and any health workers was kicked off with the tagline ***"Main Bhi Harjeet Singh"*** almost in many parts of India.

However, continuous attacks such as pelting of stones, mob attakcs are being done on these frontline workers such as in Uttar Pradesh, Assam, Rajasthan, Kanpur etc. Attacks by migrant labourers in Surat, Yamunanagar and many other places are also witnessed. Ordinance for all frontline worriers have been issued by the Government viewing continuous attacks on them but attacks are happening inspite of ordinance, as recently a Jalandhar cop was dragged on car by a teenager. It appears as if the attackers are on the hunt.

Police bravery is also seen in their acts as they say they won't regret dying in a bid to save others. Hence, scant incidences of use of force by the police to save lives be ignored in view of the larger interest of the Nation.

◆ This perhaps is the time, for the Nation to feel proud of a Indian Police for their micro-management for fighting Covid-19. Measures such as motivation out of terms, promotions etc. are one time measures for enhancing the spirit of police. However, policy makers should seriously think for granting special leave to these frontline fighters on the occasions of Deepawali, Holi, Raksha Bandhan etc. as they are on continuous duty. For these duty officers their ACRs should be graded at least "Very Good". They should be honoured with prestigious meritorious service awards for their display of exemplary courage and valour.

Further, the Police Personnel deputed on Covid-19 duties who have shown exemplary courage be deputed in Police Training Centres for imparting training to the new recruitees of their first hand experiences, courage during the time of pandemic and to infuse in them the spirit of policing.

Its high time that police be allotted a handsome budget as per the departmental demand as new laws are enacted with a rapid pace without involving the police in the conception stage with the result that the implementation of these laws leaves much to be desired. In recent years, police has become highly technical and thus then salary of the Police Personnel should be enhanced as per technicians.

Special emphasis be laid on protection of human rights of the police so that the dignity of police is not damaged.

As long as the policy makers do not start thinking towards police oriented planning and for their psychological well-being, the problems faced by the police personnel will continue to eclipse the good performance of police functionaries and they will become the targets of criticism by intellectuals, jurists, social activists, media, politicians and citizens.

शिक्षा संत स्वामी केशवानंद

– डा. ज्ञान प्रकाश पिलानिया, जयपुर

(स्वामी केशवानंद जी का यह लेख 'जाट ज्योति' के अंक सितंबर 2002 में प्रकाशित किया गया था। आदर्श साधु, समाज सुधारक, सांसद सदस्य स्वामी का यह रोचक लेख पाठकों की जानकारी के लिये पुनः प्रकाशित किया जा रहा है)

कष्टमय बचपन

राजस्थान के अभावग्रस्त रेगिस्तानी क्षेत्र में स्थित सीकर जिले के एक छोटे से गांव मगलूणा में बीरमा (जो बाद में स्वामी केशवानंद के नाम से प्रसिद्ध हुए) का जन्म दिसंबर 1883 (पौष संवत् 1940) में एक साधारण किसान–ढाका जाट परिवार में हुआ। बचपन में ही, चार वर्ष के बालक बीरमा के सिर से बाप का साया उठ गया। उस समय का दीन–हीन ग्रामीण किसान समाज सामंतों, राजाओं–नवाबों और विदेशी शासकों तिहरी गुलामी में दबा हुआ, कुशासित एवं शोषित, निरक्षर, अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ, निरर्थक रूढ़ियों में संलिप्त, प्राकृतिक क्रूरताओं से प्रताड़ित, नारकीय जीवन ढ़ो रहा था। ऐसे परिवेश में बीरमा ने 16 वर्ष की आयु तक, इन यातनाओं को निर्लिप्त भाव से अनजाने में, अपनी नियति स्वीकारते हुए भोगा। उसके बालपन और किशोरावस्था रेतीले टीलों के बीच, सर्दी–गर्मी लगभग नंगे बदन सहते हुए, गौचारण में बीते। वर्ष 1899 (संवत् 1956) के भीषण दुर्भिक्ष में उसकी मां भी भूख और रोग के मारे चल बसी। अकाल पीड़ित होकर उजड़ कर उत्तर पंजाब की ओर जाते हुए लोगों के साथ मातृ–पितृहीन बीरमा भी चल पड़ा और वहां पहुंच कर उसे फिरोज

विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दिखती है, दुनिया उस पर अमल करती है। –विनोबा भावे

के आर्य अनाथालय में आश्रय मिला। वहीं रहते हुये उसे संस्कृत भाषा का प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त हुआ और उसे शिक्षा प्राप्त करने की लगन लग गई।

साधुवेश धारण

तीन–चार वर्ष अनाथालय में रहने के पश्चात बड़ी आयु के कारण बीरमा को वहां से हटना पड़ा। संस्कृत पढ़ने की तीव्र इच्छा लिए वर्ष 1904 में बीरमा फाजिल्का (पंजाब) के उदासी संत कुशलदास के डेरे में जा पहुंचा और उन्हें गुरुधारण कर वह उदासी मत में दीक्षित हो गया। उदासी मत की परंपरा के अनुसार उसे गुरुमुखी (पंजाबी) भाषा सीखनी पड़ी, जिसमें वह सहज ही पारंगत हो गया और कुछ ही दिनों में गुरु ग्रंथ–साहब का अच्छा पाठी बन गया। वर्ष 1905 में वह तीर्थ–भ्रमण के लिए निकला और प्रयाग के कुंभ मेले में अवधूत हीरानंद के संपर्क में आने पर उसे ''केशवानंद'' नाम दे दिया गया। फाजिल्का लौटने पर कुशलदास जी ने साधु को हरिद्वार और अमृतसर आदि स्थानों पर संस्कृत अध्ययन के लिए भेजा। अध्ययन के साथ–साथ उन्होंने देश–भ्रमण भी चालू रखा और भारत भर के तीर्थ–स्थानों, मंदिरों, मठों, शहरों, विश्वविद्यालयों, शिक्षा–संस्थाओं, वनों, पर्वतों, ऐतिहासिक स्थलों पर संग्रहालयों, पुस्तकालयों में घूम–घूम कर दुनियां की अनेक पुस्तकें भी पढ़ डाली। बीच–बीच में जब वे फाजिल्का गुरु–आश्रम में होते तो वहां की सफाई, अतिथि–सत्कार, गुरुसेवा और गुरु ग्रंथ साहब का पाठ अतीव निष्ठा से करते थे। गुरुजी उनकी कर्तव्य परायणता, सेवा भावना, सचरित्रता और योग्यता से इतने प्रसन्न थे कि उन्होंने वर्ष 1908 में साधु केशवानंद की अनुपस्थिति में ही अपने अंतकाल से पूर्व गुरुगद्दी उन्हें देते हुये डेरे की रजिस्ट्री उनके नाम करा दी। उस समय तक केशवानंद केवल वेश से ही नहीं मन और व्यवहार से भी पूरे संत बन चुके थे। अतः ''परोपकराय सतां विभूतयः'' के अनुसार उन्होंने संपन्न डेरे के रूप में प्राप्त हुई उस पहली विभूति को उपयोग भी परोपकार में ही करना अपना कर्तव्य समझा। सर्वप्रथम परोपकार के रूप में उन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार को चुना।

राष्ट्र भाषा प्रचार

फाजिल्का अबोहर के इलाके में उन दिनों उर्दू का बोलबाला था, हिंदी का कोई नाम न था। ग्रामीण समाज में व्याप्त अर्थहीन रूढ़ियों की जड़ खोदने के लिए स्वामी केशवानंद जी ने आवश्यक समझा कि उन्हें हिंदी भाषा का ज्ञान देकर भारतीय संस्कृति के सही रूप से परिचित कराया जाये। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होंने वर्ष 1911 में साधु–आश्रम (गुरु–डेरे) में एक पुस्तकालय–वाचनालय आरंभ कर दिया जहां हिंदी की पुस्तकें और समाचार पत्र मंगाए जाने लगे। शहर के लोगों ने उनसे लाभ उठाया और हिंदी का स्वतः प्रचार हुआ। स्वामी जी हिंदी पुस्तकों की गठरी बांधकर आस–पास के गांवों में ले जाते और लोगों को उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करते। वर्ष 1912 में उन्होंने आश्रम में एक संस्कृत पाठशाला भी आरंभ कर दी। वर्ष 1916 में उन्होंने अपनी फाजिल्का की गुरुगद्दी का त्याग करके अबोहर में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की। वर्ष 1924 में उन्होंने व्यापक रूप से हिंदी का प्रचार करने के लिए– ''साहित्य सदन अबोहर'' नाम की संस्था का श्रीगणेश किया। साहित्य सदन अबोहर द्वारा ''चल पुस्तकालय'', केंद्रीय पुस्तकालय–वाचनालय, हिंदी की ग्रामीण पाठशालाओं, प्रेस लगाकर हिंदी मासिक ''दीपक'' और ग्रामोपयोगी सत्साहित्य का प्रकाशन आदि योजनाओं से इलाके में हिंदी के पठन–पाठन को बढ़ावा दिया गया। साहित्य सदन में ही हिंदी साहित्य–सम्मेलन प्रयाग, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा और पंजाब विश्वविद्यालय की हिंदी परीक्षाओं के केंद्र स्थापित कराए गए और हिंदी विद्यालय प्रारंभ कर उन परीक्षाओं की तैयारी का प्रबंध किया गया। इन विभिन्न परीक्षाओं में प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में छात्र–छात्राएं प्रविष्ट होते थे।

साहित्य–सदन अबोहर में ही वर्ष 1933 में नौवां पंजाब प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन और वर्ष 1914 में अखिल भारत वर्षीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का तीसवां अधिवेशन अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुए। राष्ट्र भाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार की इन गतिविधियों का सुपरिणाम यह हुआ कि वर्ष 1947 में देश विभाजन के समय फाजिल्का तहसील जिसमें अबोहर भी शामिल था, हिंदी भाषी और हिंदू–सिख बाहुल मानी जाकर पाकिस्तान में जाने से बच सकी और उसके साथ लगती छोटी–छोटी दो मुस्लिम रियासतें जलालाबाद और ममदोट भी भारत वर्ष के हिस्से में आ गई।

स्वतंत्रता आंदोलन में भाग

वर्ष 1907 में स्वामी जी ने समाचार पत्रों को पढ़ना प्रारंभ कर दिया था जिसमें प्रायः देश की स्वतंत्रता की चर्चा रहती थी। उनके मन में भी स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने की इच्छा जागृत हुई। वर्ष 1921 में गांधीजी के आहवान पर वे भी असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए जिसके कारण उन्हें दो वर्ष की जेल की सजा भुगतनी पड़ी। वर्ष 1930 में वे पुनः देश की पूर्ण स्वतंत्रता के संदेश के प्रचारार्थ फिरोजपुर जिले के डिक्टेटर बनाए गए। उन्होंने उत्साहपूर्वक प्रचार किया। परिणामतः गिरतार किए गये व उन्हें मुलतान की कुख्यता सैंट्रल जेल भेज दिए गए। वहां से वे लगभग एक वर्ष बाद गांधी–इरविन पैक्ट होने पर जेल से मुक्त हुए।

मुलतान जेल में रहते हुए स्वामी जी की देश–सेवा विषयक विचारधारा में परिवर्तन आ गया। उन्होंने अनुभव किया कि जब तक देहात के लोगों को शिक्षित नहीं किया जाता तब तक उन्हें स्वराज प्राप्ति का महत्व समझ में नहीं आ सकता। इस कारण उसी समय से उन्होंने देहात में शिक्षा–प्रचार को अपना लक्ष्य बना

लिया।

शिक्षा–प्रचार ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया का निर्माण

स्वामी केशवानंद जी को वर्ष 1932 में तत्कालीन बीकानेर राज्य में स्थित संगरिया कस्बे (राजस्थान) के जाट मिडिल स्कूल का संचालन भार भी संभालना पड़ा, जो आर्थिक तंगी के कारण बंद होने को था। स्वामी जी उसमें जी–जान से जुट गए और उन्होंने इलाके से दान संग्रह करके वर्ष 1937 तक पहले के पांच कच्चे कमरों के स्थान पर मुख पक्का विद्यालय भवन–सरस्वती मंदिर, औषाधालय–रसायन वाला पुस्तकालय भवन और यज्ञशाला, व्यायामशाला, आर्यकुमार आश्रम छात्रावास और दो पक्के जलाशयों (कुण्डों) से युक्त एक सुंदर शिक्षा उपनिवेश खड़ा कर दिया। वर्ष 1943 तक विद्यार्थी आश्रम छात्रावास व सभा–भवन, गौशाला–भवन, पांच अध्यापक–निवास, अतिथिशाला, स्नानागार और एक कुण्ड निर्मित करवा कर विद्यालय को हाई स्कूल में उन्नत कर दिया गया। वर्ष 1948 तक वहां आयुर्वेद शिक्षा, वस्त्र–निर्माण और सिलाई, काष्ठ कला और धातु कार्य आदि उद्योगों की शिक्षा चालू कर संस्था का नाम ''ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया'' कर दिया गया। जाट स्कूल की दशा सुधारने के पश्चात स्वामी जी का ध्यान बीकानेर राज्य के उन मरूस्थलीय गांवों में शिक्षा–प्रचार की ओर गया, जहां उन्होंने जीवन के प्रथम सोलह वर्ष बिताए थे।

जाट विद्यालय के लिए दान–संग्रह के सिलसिले में भी उन्होंने अनेक बार गांवों के पैदल चक्कर लगाए थे। अतः वे वहां की हर समस्या से परिचित थे। उस अनुभव के आधार पर उन्होंने वहां शिक्षा–प्रचार की एक विस्तृत योजना बनाई और उसे ''मरू–भूमि सेवा–कार्य'' नाम दिया। उसका संचालन–कार्यालय ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया में रखकर उन्होंने वर्ष 1944 से 1959 तक के वर्षों में ''त्रैवार्षिक शिक्षा योजना'', ''ग्रामोत्थान पाठशाला योजना'' और ''समाज शिक्षा–योजना'' के अंतर्गत मरुभूमि के गांवों में 287 शिक्षा–शालाओ ंकी स्थापना और संचालन किया। इस कार्य में उन्होंने ग्रामवासियों का भरपूर सहयोग किया। इन शिलाओं में छात्र–छात्राओं की शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा और गांव वालों की प्राथमिक चिकित्सा का प्रबंध रहता था। इन शिक्षा–योजनाओं से बीकानेर, लूनकरणसर, सूरतगढ़, नोहर, भादरा, राजगढ़, चूरू, रतनगढ़, सुजानगढ़, डूंगरगढ़, नापासर और सरदारशहर तहसीलों के गांवों में शिखा प्रचार का इतना कार्य हुआ कि वहां जागृति की लहर उठ खड़ी हुई और लोगों में उन्नति की चाह और उत्साह पैदा हो गया।

स्वामी जी की कर्मठता से संगरिया की संस्था ''ग्रामोत्थान विद्यापीठ'' भी निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर रही। स्वामी जी के जीवन काल में ही वर्ष 1972 तक उसमें कृषि–कला, विज्ञान महाविद्यालय, 300 एकड़ का कृषि फार्म, शिक्षा महाविद्यालय, शिक्षक–प्रशिक्षक विद्याल, छात्र–छात्राओं के अलग–अलग छात्रावास आदि शैक्षिक प्रवृतियां और स्वास्थ्य–रक्षा और आयुर्वेद–शिक्षा के लिए नवजीवनन औषधालय–रसायनशाला की स्थापना हो चुकी थी। संस्था में लगभग 4000 छात्र–छात्राएं अध्ययन करते थे उनमें से 800 विभिन्न छात्रावासों में रहते थे।

समाज सुधार कार्य

स्वामी जी ने मरुस्थल में प्रचलित मृत्युभोज, अनमेल बालविवाह, नारी–उत्पीड़न, पर्दा–प्रथा, शोषण और नशा–सेवन आदि, समाज को गरीबी और कष्टों में डालने वाली बुराइयों का भी खूब अनुभव किया था। इसलिए वे लोक–सेवा का मार्ग पकड़ते ही वर्ष 1908 से इनके विरोध में प्रचार करते आ रहे थे। वर्ष 1942 में जाट विद्यालय संगरिया की रजत जयंती के अवसर पर उन्होंने मृत्यु भोज पर कानूनी पाबंदी लगाने का प्रस्ताव पारित कर बीकानेर–सरकार को भेजा था जिसे स्वीकार कर राज्य में मृत्यु–भोज को कानून–विरूद्ध ठहराया था। ''मरूभूमि सेवा कार्य'' के स्कूलों में भी इन बुराइयों के विरूद्ध प्रचार किया जाता था। वर्ष 1967 में स्वामी जी को जिला सर्वोदय मंडल और जिला नशाबंदी समिति का अध्यक्ष चुना गया। उन्होंने प्रचारार्थ एक इश्तिहार में लिखा ''हम इतिहास प्रसिद्ध सर्वखाप पंचायत का सातवां अधिवेशन संगरिया में बुलाकर विवाह प्रथा में सुधार करना चाहते हैं, और दान में एक रूपया और नारियल देने की प्रथा चलाना चाहते हैं। विवाहों में फिजूल खर्ची का रूपया बचाकर बच्चों की, विशेषकर कन्याओं की, शिक्षा में लगाना चाहते हैं। इसके अलावा इस क्षेत्र में शराब, तंबाकू के दुर्व्यसनों को हटाने तथा आपसी झगड़ों का निपटारा कराने के लिए ग्रामीण लोगों को थाना कचहरी में जाने के विरूद्ध प्रचार करना और पंच फैसलों के द्वारा झगड़े निपटाने के पक्ष में जनमत बनाना चाहते हैं।'' उन्होंने इस आश्य के बड़े–बड़े चार्ट बनवाकर गांवों की दीवारों पर लगवाये।

साम्प्रदायिक सद्भाव

सच्चे साधु होने के नाते स्वामी जी किसी सम्प्रदाय विशेष से न जुड़ककर मानव मात्र के कल्याण के लिए कार्यरत थे। उन्होंने "जाठ विद्यालय" का नाम बदलकर "ग्रामोत्थान विद्यापीठ" रखवाया। उनकी संस्थाओं में सभ्य जातियों के छात्र बिना किसी भेद–भाव, किसी प्रकार छूआछूत न मानते हुए शिक्षा ग्रहण करते थे। आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने हरिजन छात्रों के लिए "सरस्वती छात्रावास" बनवाया। सिख गुरूओं की कल्याणमयी वाणी और सिखों के शौर्य और बलिदान की कहानी हिन्दी भाषी समाज तक पहुंचाने के लिए उन्होंने हिन्दी में एक 700 पृष्ठों के वृहद सिख इतिहास को लिखवाकर प्रकाशित कराया। उन्होंने बिश्नोई के प्रवर्तक गुरू जम्मेश्वर जी की जीवनी, महर्षि सुकरात, मार्टिन लूथर, महात्मा मेजिनी और महात्मा शेखसादी की जीवनियां भी प्रकाशित कराई। स्वामी जी के निमंत्रण पर नामधारी सिखों के गुरू जगजीत सिंह जी, जैन मुनि आचार्य तुलसी, जगन्नाथ पूरी के शंकराचार्य,

दूसरों के अनुभव से होशियारी सीखने की मनुष्य की इच्छा नहीं होती, उसको स्वतंत्र ठोकर चाहिए। –विनोबा भावे

राजस्थान के मुख्यमंत्री बरकतुल्ला खां और हरिजनों के मसीहा बाबू जगजीवनराम समय–समय पर ग्रामोत्साथन विद्यापीठ में पध ाारे। वास्तव में स्वामी केशवानन्द जी साम्प्रादायिक सद्भाव की जीती जागती तस्वीर थे।

एक आदर्श साधु एवं संसद सदस्य

स्वामी केशवानन्द जी ऐसे अनोखे साधु थे जिन्होंने आत्म–कल्याण या मोक्ष प्राप्ति के स्वार्थमय पथ पर चलने की अपेक्षा आजीवन ब्रह्मचारी रहते हुए पर सेवा और कल्याण में लगे रहना श्रेयस्कर समझा। उसी को उन्होंने पूजा–पाठ, जप–तप और ध्यान–समाधि बनाया। लोक–सेवा का मार्ग अपनाकर उन्होंने इलाके में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार से भारतीय संस्कृति को पुनरूत्थान का काम किया, स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेकर दो बार जेल की सजा भुगती, जाट विद्यालय संगरियां की बागडोर संभालकर उसे 40 वर्ष के सतत् श्रम से इलाके की सर्वाधिक उपयोगी और सर्वप्रिय संस्था ग्रामोत्थान विद्यापीठ के रूप में विकसित किया, मरूस्थलीय गांवों से अशिक्षा के भूत को मार भगाया और समाज–शोधन का महत्वपूर्ण कार्य भी किया। एक खाली हाथ फकीर ने जन सहयोग से करोड़ों रुपये की शिक्षा–संस्थाएं खड़ी कर दीं और 64 वर्ष के लोक–सेवा–काल में जन–जागरण का जो विशाल कार्य किया उसका मूल्य तो मूल्यों में आंका ही नहीं जा सकता।

स्वामी जी राजस्थान की ओर से वर्ष 1952 से 1964 तक संसद सदस्य (राज्य सभा) रहे और उस काल में उन्हें जो भत्ता मिला उसे उन्होंने ग्रामोत्थान विद्यापीठ के संग्रहालय के विस्तार में लगा दिया। स्वतंत्रता–सेनानी होने के नाते उन्होंने कभी न किसी भत्ते की मांग की और न ही किसी ताम्रपत्र की चाह रखी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा ने उन्हें राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा के लिए क्रमशः "साहित्य वाचस्पति" और "राष्ट्रभाषा गौरव" की उपाधियों से विभूषित किया। सिख संगत ने उन्हें वर्ष 1956 में पवित्र हरि–मन्दिर साहिब अमृतसर के उन स्वर्ण पत्रों के जीर्णोद्धार उत्सव का मुख्य अतिथि बनाकर सम्मानित किया, जिन्हें महाराजा रणजीत सिंह ने वर्ष 1801 में भेंट किया था। इलाके के श्रद्धालू लोगों द्वारा डा. बनारसीदास चतुर्वेदी जी के संपादकत्व में तैयार किया गया "स्वामी केशवानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ" राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया द्वारा स्वामी जी को एक विशाल सम्मेलन में 9 मार्च, 1958 को भेंट किया गया। पुरातत्व विशेषज्ञ डा. वासुदेवशरण अग्रवाल स्वामी जी का संग्रहालय देखने वर्ष 1948 में ग्रामोत्थान विद्यापीठ में आए। वर्ष 1953 में रेलवे मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री, वर्ष 1957 में प्रसिद्ध हिन्दी सेवी राजर्षि पुरुषोतमदास टंडन और वर्ष 1959 में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी और आचार्य विनोबा भावे संगरिया पधारे और ग्रामोत्थान विद्यापीठ की शैक्षिक प्रवृतियों को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए। अपनी उसी यात्रा का स्मरण करते हुए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 6 सितम्बर, 1984 को स्वामी जी पुण्य तिथि के लिए दिए सन्देश में लिखा था, "स्वामी जी केशवनन्द स्वतंत्रता के एक सजग प्रहरी थे। साथ ही उन्होंने राजस्थान, हरियाणा और पंजाब में शिक्षा, महिला कल्याण और दलित वर्ग के उत्थान के लिए सराहनीय कार्य किया। संगरिया में ग्रामोथान विद्यापीठ ग्रामीण क्षेत्र में उनके कार्यों का एक जीवित स्मारक है।"

स्वामी केशवानन्द जी समाज–सेवियों के लिए सदियों तक प्रेरणा–स्त्रोत बने रहेंगे।

भारत के गणतंत्र के सत्तर बरस

– सूरज भान दहिया

आज से कोई नब्बे बरस पहले 26 जनवरी 1930 को लाहौर मे रावी नदी के तट पर हमारे राष्ट्रनायको ने यह हद संकल्प लिया था कि भारतवासी तक तक संघर्ष करते रहेगे जब जक भारतपूर्ण स्वाधनि गणतंत्र नही बन जाता। इस संकल्प से सारे देश मे एक ज्वरसा आ गया था–अनी नियति को स्वंय निर्धारित करने का पवित्र लक्ष्य ।15 अगस्त 1974 मे आजादी पाने के बाद 26 जनवरी 1950 को भारत गणतंत्र राष्ट्रबना। आओ उन संकल्पो का अवलोकन करने हेतु उन गांवो की गलियो मे चले जहां जनजीवन बन या बिगड रहा है।राजपथ पर गणतंत्र दिवस की रंग बिरंगी झकियाँ जो विदेशी विभूति–राष्ट्रीय अतिथि के समक्ष दिखाई जाती हैं क्या असली भारत जो गांवो मे बसता है का प्रतीक हैं ? 73 वर्षों के आजादी के बाद भी आज का भारतीय बदहवांस साहस से शून्य, दिशा भ्रमित खोया–खोया–सा भटकता नजर आ रहा है। भ्रष्टाचार मिलावट कर चोरी पक्षपात देशद्रोही, तस्करी जैसे व्यवसांय के माध्यम से खड़ी की गई गगन चुंबी शहरी इमारते राष्ट्र के गौरव का प्रतीक नही हैं और इनके नीचे घूमता हुआ ईमानदार सच्चा व नैतिक आदमी अपने आपको बौना अनुभव करता है। देश के अधिकांश साधनो का उपभोग उसकी आबादी का मात्र एक प्रतिशत करता है वह जो अमीर है। अभिजात्य के तीन अंग–व्यापारी, अफसर, राजनेता, तीनो ज्यादा ताकतवर होने के लिये आपस मे लड़ रहे हैं और झठे नारो व आश्वासनो से जनता का दुरुपयोग कर रहे हैं। यह कैसा गणतन्त्र जिसमे अमीरी की अमीरी और गरीबो की गरीबी दिनो दिन बढती जा रही है? गांधी जी के हिदं स्वराज्य की कल्पना क्या यही थी?

कलियुग में रहना है या सतयुग में यह तुम स्वयं चुनो। तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। –विनोबा भावे

कहने को भारत विश्व का सबसे महानतम लोगतंत्र है। पर इस दुनिया के बीच मे बुहिदजीवी और साहित्यकार की नियति स्वयं स्पष्ट है, भारत इक्कसवी सदी मे होकर भी उससे टूटा हुआ और कटा–सा आमआदमी भूखमरी बेकारी और बेबसी से बेतहाशा लड रहा है। जिन्हे सुविधएँप्राप्त हैं वे समाजवाद अथवा 'मानवतावाद' जैसे नारो के साथ जनता का शोषण करते हैं। यहां प्रजातंत्र के नाम पर निरक्षर भेड जनता के चुने हुये प्रतिनिधि कानून बनाकर जनव्याय का ढिंढोरा भले पीटे, यह स्पष्ट है सारा प्रशासन कुछ 'सुविधा भोगियो' के लिये है। वैसी भी प्रजातंत्र वह है जिसका तंत्र प्रजा हो, यानी कोई न हो प्रजा शब्द अर्थ हीन है। गणतंत्र सरकार के बारे मे तो किसान पुत्र अब्रधिन लिंकन–अमेरीका के महान राष्ट्रपति ने कहा था सरकार जन हैं जन द्वारा निर्वाचित होती है तथा जन के प्रति समर्पित होती है। भारत के लोकतंत्र में यह विरोधामास क्यो?

आज देश में आंदोलनो और अभियानो द्वारा जो वातावरण बनाया जा रहा है उससे अनेक गंभीर प्रश्न उठ खडे हुये हैं। आज जो भी आन्दोलन हो रहे हैं वे कुर्सी आन्दोलन हैं। हमारे पथप्रर्दशको को स्वस्वार्थ हेतु खामोश जनता चाहिये जो भारत हमेशा से काफी तादादमे देता रहता है। इसलिये सभी आन्दोलन वास्तविकता को समझ लेना चाहिये कि असली लड़ाई तो 'लुटेरो' और 'कमेरो' के बीच है। भारत देश शुरु से ही कृषि प्रधान देश है इसलिये देश मे लोकतंत्र की सुहढ़ता कृषि विकास अर्थात् किसान समृध्दि के इर्द गिर्द घूमती है। हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन का श्रीगणेश भी किसानो ने ही किया था। पर आज किसान कहां खडा है?

किसानो ने आजादी के बाद से देश के कृषि वैज्ञानिको नीतिनिर्माताओ और राजनीतिक नेतृत्व के कहने पर स्वंय को नई तकनीक (विदेशी प्रभावी) के हवाले कर दिया। इनका परिणाम यह हुआ कि किसानो के अलावा सभी के वारे न्यारे हो गये और किसान लगातार गरीब की चपेट मे घंसता गया– घंसता गया और आत्महत्या के लिये विवश हो गया। आइए आप भी किसानो पर कुछ रो दिये, मै तो यही कहूँगा, हमारा गणतंत्र तीन थके हमे रंगो का नाम और हमारा ध्वज कमजोर और निस्तेज नेताओ के हाथ मे चला गया है जो किसान के प्रति संवेदनशील नही किसान संबधी एक शेर याद आ रहा है–

वार्ताएं, घोषणएं, योजनाए फैसले इतने पत्थर और तनहा आईना निष्पर्क का। कृषि भारतीय सभ्यता का आत्मा है, जब इस की आत्मा ही खतम हो गई तो बचा क्या?

एक किसान अभिलेखागार मे एक दस्तावेज–"खेती के सिंचाई का पानी उद्योगो ने हडप लिया, खेती की जमीन महानागरी बसाने के लिए छीन ली गई महानगरी गगन चूंबी इमारत मे लाईफ स्टाईल के आर्कषण हेतु गांवो की महिलाओ को कोसो पीने का पानी तलाशन हेतु मजबूर बना दिया– खेत हो खलिया न हो, किसान हो किसान परिवार हो भारत में सभी कुछ तो शोषण साम्रगी बनकर रह गया है।" फ्रांस देश यह मानता है– "जब किसान मरता है तो शताब्दी मरती है। " यह है हमारे सातदशक के गणतंत्र की हकीकत।

हरियाणा की बेटी डॉ. सुमन ग्रेवाल अमेरिका में निभा रही फर्ज

– डॉ. सुमन ग्रेवाल

हरियाणा के सभी भाई और बहनों को राम–राम। मैं सुमन ग्रेवाल हूं। रोहतक के समाचाना गांव में मेरी ससुराल है लेकिन मेरा गांव धनाना है और मेरे पापा ओमप्रकाश राठी जी की वजह से हरियाणा से अमेरिका का सफर तय कर पाई हूं। पिछले कई साल से न्यूयॉर्क में न्यू ड्रग आफिसर के रूप में कार्यरत हूं और इसके अलावा कॉलेज में कैमेस्ट्री भी पढा रही हूं। ड्रग आफिसर के रूप में मेरा काम यहां ये है कि कोई भी दवा जो एफडीए से अप्रूव करवाना चाहते हैं, उनकी मदद मैं करती हूं। आज पूरी दुनिया की ये चिंता है कि कोरोना वायरस के लिए फिलहाल कोई दवा नहीं है। इसलिए मरीजों पर अलग अलग दवाओं का प्रयोग करके देखा जा रहा है कि कोरोना पर कौन सी दवा ज्यादा कारगर है। हमारी यूनिवर्सिटी में भी ऐसे बहुत से एक्सपेरीमेंट चल रहे हैं। जो मरीज कोरोना से ठीक हो चुके हैं उनका प्लाज्मा लेकर संक्रमित मरीजों में दिया जाता है ताकि वो जल्दी ठीक हो सके। यही कोशिश दवा की अनुमति दिलाने के लिए भी रहती है। अब यहां पूरी तरह से ऑनलाइन स्टडी ही चल रही है। यहां कॉलेज इयर मई तक रहता है और स्कूल इयर जून तक रहता है। इस समय ऑनलाइन टिचिंग ही पूरी तरह से हर जगह पर हो रही है। कोरोना को लेकर आज तक न्यूयार्क स्टेट की जो खबरें वो बहुत दुखदायी हैं। अकेले न्यूयार्क में नौ हजार से भी ज्यादा लोगों की जान जा चुकी है और करीब दो लाख के लगभग कंफर्म केस हैं। यहां भी टेस्टिंग केवल उनकी की जा रही है जो कोरोना के लक्षण दिखा रहे हों या किसी ऐसे मरीज के संपर्क में आए हैं।

ऐसे मरीज को पहले अपने फिजिशियन को कॉल करके बताना होता है इसके बाद वो डॉक्टर ही तय करता है कि क्या करना है। हालात कैसे हैं इसका अंदाजा आप लगा सकते हैं कि केवल शेयूडल तय करने में ही दो से तीन दिन लग रहे हैं। यहां भी केस का लोड सहन करना मुश्किल

जो मनुष्य के साथ दयालुता का बर्ताव नहीं करता, किंतु पूजा का दिखावा करता है, वह ढ़ोगी कहा जा सकता है। –अज्ञात

होता जा रहा है। दूसरे स्टेट से यहां हेल्थ वकर्स बुलाए जा रहे हैं। स्पोर्टिंग स्टाफ बुलाया जा रहा है। न्यूयार्क में लॉकडाउन है लेकिन ये स्वैच्छिक है। केवल जरूरी सामान और दवाओं की दुकानें खुली हुई हैं। सोशल डिस्टेंसिंग के लिए सरकार फोकस कर रही है दस से ज्यादा लोग यहां इक्ट्ठा नहीं हो सकते हैं। इसके बावजूद लोग इक्ट्ठा हो रहे हैं और अब फाइन भी लगाने की चेतावनी दी जाने लगी है। चर्च में भी प्रार्थना के तरीके बदल दिए हैं। दूसरे धार्मिक स्थलों ने भी ये सुविधा दी है। यहां पर अब ज्यादातर घर से ही काम कर रहे हैं। मास्क और ग्लवस पहनना पूरी तरह अनिवार्य कर दिया गया है। न्यूयार्क सिटी के बारे में कभी कहा जाता था कि ये शहर कभी सोता नहीं है लेकिन आज वो बयाबान पडी है। सिर्फ अस्पताल जाने या जरूरी सामान के लिए ही यहां लोग निकल रहे हैं। बेरोजगार यहां अचानक बढ गए हैं। जॉब्स छूट गई है, सरकार ने रिलीफ पैकेज दिया है लेकिन वो पहुंचने में भी समय लगेगा। मेरा काम इसलिए बढ गया है क्योंकि अगर रात को भी किसी दवा की जरूरत है तो मुझे अप्रोच किया जाता है और मैं एफडीए से संपर्क कर उसकी अनुमति दिलाई जाती है। मरीज पर नई दवा से पहले भी मरीज के परिजनों से भी अनुमति लेनी होती है। ऑनलाइन ही मैं लेक्जर भी दे रही हूं। कॉलेज का यहां एक अगल से इंटरफेस होता है जिसका नाम ब्लैकबोर्ड है। स्टूडेंट्स के साथ इंट्रेक्शन से पता चलता है कि कितने बुरे दौर से गुजर रहे हैं और किसी को कुछ भी नहीं पता है कि आखिर ये कब तक चलेगा। आपस में बात करके थोडी तसल्ली मिलती है। जिन स्टूडेंटस के पास कंप्यूटर या इंटरनेट नहीं थे वो कॉलेज उपलब्ध करवा रहे हैं। भारतीय समुदाय और विशेषकर हरियाणा के हम लोग आपस में पूरी तरह जुडे हुए हैं। भारत की खबरों पर भी हर नजर रख रहे हैं, जैसे भारत में पीपीई की कमी है वो यहां भी है। यहां भी मास्क की कमी है। फेश शील्ड का भी यही हाल है। जो कंपनियां कपडे बनाया करती थी वो अब मास्क बना रही हैं और दान कर रही हैं लेकिन कोरोना पेशेंट की तादात इतनी ज्यादा है कि हर तरह के प्रयास भी कम पड रहे हैं। जाट एसोसिएशन भी यहां पर आगे बढकर सभी हरियाणा के लोगों की हर तरह से मदद कर रही है। जिसके पास जितने भी संसाधन हैं वो अपने अपने तरीके से मदद कर रहा है। हरियाणा के लोगों के लिए मैं कहना चाहूंगा कि वो लॉकडाउन को बहुत गंभीरता से लें क्योंकि वो अंदाजा भी नहीं लगा सकते हैं कि कोरोना संक्रमण कितना भयावह हो सकता है। सुकून है कि भारत में अभी ये काबू में है तो इसका बडा कारण लॉकडाउन है।

सविता जाखड़ फ्रांस में मास्क सील कर दान कर रही ये बेटी

– सविता जाखड

हरियाणा के सभी नागरिकों को मेरी राम–राम। मैं सविता जाखड़ फ्रांस की वर्साइ सिटी में रह रही हूं, लेकिन आज भी मेरा दिल हरियाणा और हरियाणा में झज्जर जिले के मेरे छोटे से गांव मोहनवाडी में धड़कता है। आप जानते ही हैं कि पूरी दुनिया में कोरोना का खौफ पसरा है और फ्रांस भी इससे अछूता नहीं है। अब तक फ्रांस में तेरह हजार से भी ज्यादा लोग कोरोना से मारे जा चुके हैं। बहुत सारे ऐसे पेशेंट भी हैं जो दूसरी बीमारियों के मरीज थे लेकिन कोरोना की वजह से डॉक्टर उन पर ध्यान नहीं दे पाए, उनका आंकडा अभी मौजूद नहीं है। यहां फ्रांस में हम सभी भारतीयों समेत दूसरे लोग भी 17 मार्च से ही लॉकडाउन में हैं। 17 मार्च को जब पहली बार यहां लॉकडाउन हुआ था तो वो दो सप्ताह के लिए था। भारत की तरह ही लॉकडाउन के दौरान किस तरह की स्थिति रहेगी यह उसी दिन फ्रांस की सरकार ने भी क्लीयर कर दिया था। इस दौरान हम कहीं भी बाहर निकलते हैं तो यहां की लोकल गर्वनिंग का एक फार्म ऑनलाइन ही हमें भरना होता है। हम बाहर केवल दूसरे लोगों की मदद और जरूरी सामान और दवा के लिए ही निकल सकते हैं। जो लोग जॉब के चलते जैसे सुरक्षा और डॉक्टर आदि उनको भी ऑनलाइन अनुमति लेनी पड़ती है। अगर घर में जानवर रखते हैं तो घर के पास 500 मीटर तक ही आप उसे घूमाने ले जा सकते हैं। सरकार ने यह भी बता रखा है कि जो लोग बेरोजगार हुए हैं। कोरोना के चलते यहां बहुत सी कंपनियों ने कांट्रेक्ट कैंसिल किए हैं लेकिन मीनिमम वैजिज का 84 प्रतिशत सैलरी का फ्रांस सरकार इस दौरान भी देंगी।

सरकार ने घोषणा की है कि जिनका छोटा बिजनेस है उन्हें सरकार 1500 यूरो देगी। बिजनेस के लिए सरकार यहां लोन भी देगी। सरकार ने ये भी बोला है किसानों की हेल्प करना चाहते हैं, वो अनुमति लेकर जा सकते हैं और वो जितने घंटे भी किसानों के यहां काम करेंगे उतने घंटे के हिसाब से सरकार भुगतान करेगी। लोगों को सरकार प्रोत्साहित कर रही है कि जाकर किसानों के पास काम करें। भारत की तरह यहां भी रेंडम टेस्टिंग नहीं हो रही है। ना यहां इतनी मैनपावर है और ना ही इतनी सुविधाएं हैं। यहां टेस्टिंग केवल उसी की हो रही है जिसमें कोरोना जैसे लक्षण है। फ्रांस में हर किसी एरिया के हिसाब से एक फैमिली डॉक्टर होता है। अगर हमें कोई

दुनिया बहुत कष्ट सहती है। बुरे लोगों की हिंसा के कारण नहीं, बल्कि अच्छे लोगों के मौन के कारण। –नैपोलियन

दिक्कत है तो अब वीडियो कंस्लटेशन ले सकते हैं। उसको देखकर उन्हें लगेगा कि मुझे कोरोना टेस्ट की जरूरत है तो वो खुद रिकमेंड करेंगी। अगर रात में अचानक तबीयत खराब होती है तो 24 घंटे कॉल पर एंबुलेंस की सुविधा मौजूद है। पूरी दुनिया में जैसे उपकरणों की कमी है वो यहां फ्रांस में भी है। पीपीई किट और मास्क की भी कमी है। फ्रांस में एक अच्छी बात ये भी है कि हर दस लोगों पर तीन वॉलिंटियर भी हैं। हमारे एरिया के सोशल मीडिया ग्रुप पर भी डॉक्टर ने इस तरह की अपील की। इसके बाद जो हमारे एरिया के डिजाइनर हैं उन लोगों ने ऑनलाइन आकर पूछा कि किस किस को सिलाई आती है। वो लोग हमें कॉटेंक्ट करें, हम उनसे डॉक्टरों के लिए उपकरण बनवाएंगे। मुझ समेत जिसे भी ये काम आता है सबने उन्हें कांटेक्ट किया।भारतीय लोगों का मदद करने का एक रवैया रहता है वो यहां भी देखने का मिल रहा है। हम लोगों ने वो बनाना शुरू किया वो हम सब बनाकर उनतक भेज रहे हैं। किसी के पास एक कमरा खाली है तो वो भी डॉक्टर व स्टाफ को वहां रहने की सुविधा दे रहे हैं। सरकार ने अभी हर सप्ताह साठ घंटे तक काम लेना है इसलिए अस्पताल के पास ही रहने की सुविधा लोग ही दे रहे हैं। बेकरी यहां फ्रेश ब्रेड चिकित्सक स्टाफ के लिए भिजवाते हैं। रेस्टोरेंट डॉक्टर्स के लिए खाना दे रहे हैं। लोग भी तैयार कर रहे हैं। फ्रांस में बुजुर्ग आबादी भी बहुत है और ये नर्सिंग होम में रहते हैं। काफी बुजुर्ग ऐसे भी हैं जो घरों में अकेले रह रहे हैं उनके लिए फोन नंबर उनको दिए गए हैं। फ्रेच में लिखा है आप अकेले मत रहें। कम्यूनिटी में भी ऐसे लोग हैं जिन्हें कभी क्रानिक डिजिज नहीं हुई है, उन्होंने एक ग्रुप बनाया है और हम सब बुजुर्गों को पूरी डिटेल देते हैं कि हम आपकी हेल्प करना चाहते हैं और आप मुझे कॉल कर सकते हैं। इस पर उनके फोन आते हैं और हम उनके लिए शॉपिंग तक करके देते हैं। हम उनके दरवाजे पर उनके जरूरत की चीजें रखते हैं और बिल देखकर वहां पैसे रख देते हैं। इस तरह हम एक दूसरे की मदद कर रहे हैं।

अब तक बच्चों की ऑनलाइन क्लास चल रही है। अब सर्वर की भी दिक्कत भी आ रही है इसलिए सरकार ने अनाउंस किया है जुलाई अगस्त की छुट्टियां कैंसिल कर दी है इसलिए ऑनलाइन क्लास केंसिल कर दी है। अब बच्चे क्या करें तो टीवी चौनल ने ऑनलाइन प्रोग्राम शुरू किए हैं। ऑनलाइन गेमिंग भी बच्चे खूब कर रहे हें। यहां काफी बुक्स शॉप हैं और ऑनलाइन बुक्स भी जारी कर दी है। काफी म्यूजियम ने ऑनलाइन ट्रिप्स जारी किए हैं। यूनिवर्सिटीज ने ऑनलाइन फ्री कोर्सिज दिए हैं। बच्चों को खाना बनाना भी सिखा रही हूं। एक एज्यूकेटर होने के नाते में मैं एक दो घंटे की एक्टीविटी बच्चों को दे देती हूं। घर की जरूरतों का सामान की अब यहां किल्लत होने लगी है। विशेषकर दूध और चावल की खास कमी है। सूखे दूध पाउडर की कमी है। फ्रूट और सब्जियों की दिक्त नहीं है।

10 मई को मिली चौधरी छोटूराम को सर की उपाधि

– मनोज दूहन, रोहतक

यह एक स्थापित सत्य है कि हम यूनियनिस्ट कभी भी ब्रिटिश राज में गुलाम नहीं रहे, बल्कि हम ब्रितानिया हुकूमत के पार्टनर थे, तो इसी कड़ी में मुबारक दिन अर्थात 10 मई को, 1937 ईसवीं में ब्रिटेन के महाराजा ने चौधरी छोटूराम जी को उनके द्वारा की गई मजलूमों जमींदारों की महान सेवा के मद्देनजर नाइटहुड की अर्थात सर की उपाधि प्रदान की थी। सर की उपाधि का मतलब था कि जो मंडी–फंडी जिन अंग्रेजों को सर कहा करते थे, अब वही अंग्रेज चौधरी छोटूराम जी को सर कहने लगे थे। एक गरीब किसान के घर में पैदा होकर सर की उपाधि प्राप्त करना कोई छोटी उपलब्धि नहीं थी। सूदखोरों ने तो इसी बात से नाखुश होकर अपने नौकरों का नाम सर छोटूराम की खुन्नस में छोटू निकाल दिया था कि सूदखोर अपने नौकर को कहता था, छोटू यह कर, छोटू वहकर, जोकि इनकी सर छोटूराम जी को नीचा देखने दिखाने की जातिवादी मानसिकता थी।

एक संगठन विशेष ने तो अपने नेतृत्व ने तो अपने नाम के आगे जबरदस्ती ही सर लगाना शुरू कर दिया था। असल में फंडी जातियों के मन में शुरू से ही जाटों के प्रति हीन भावना रही है, जोकि अलग अलग रूप में परिलक्षित भी होती रहती है। इसलिए आज का दिन एक खुशी का दिन है, जिसका हम स्वागत करते हैं और साथ ही ब्रिटेन के राजा का भी धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने हमारे लीडर को यह सम्मान दिया था, वरना एक किसान के बेटे को कौन सर कहता। हमारी योजना 10 मई के दिन को धूमधाम से मनाने की थी, लेकिन लॉकडाउन की वजह से हम इसको उस स्वरूप में नहीं मना पायेंगे जैसा हमने सोचा था। 10 मई के मुबारक दिन अपने अपने घरों में हलवा बनवा कर जरूर खा लें ,जैसा कि अन्य त्यौहारों पर खाते हैं और खाते–खाते यह भी याद रहे कि यह हलवा हम हमारे लीडर सर छोटूराम की वजह से ही खा रहे हैं, अगर वह हमारा रहनुमा नहीं आता और यूनियनिस्ट विचारधारा की चेतना नहीं पैदा करता तो आज हम भी कहीं किसी सूदखोर की दुकान पर मजदूरी कर रहे होते।

इस घर को आग लग गई घर के चिराग से!

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

आज हम भारतवर्ष के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य की पृष्ठ–भूमि पर कुछ विचार करना चाहेंगें। हमारे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में दो–तीन विचार–व्यवस्थाएँ अनवरत प्रवहमान थी। जिनमें अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की विचारधारा मुख्यतम थी। क्योंकि वही हमारे स्वतंत्रता–संघर्ष का नेतृत्व भी तो कर रही थी। जिसके सिद्धान्त–धर्मनिरपेक्षता और जनतंत्र थे। वह सभी धर्मों और जाति–वर्गों को अपने संग–साथ लेकर एक सर्वसमावेशी राष्ट्र के निर्माण के लिए तत्पर थी। भले ही उसमें नेतृत्व सवर्ण अथवा द्विजातियों का ही था। फिर भी हमें यह मानने में रत्ती भर भी संकोच नहीं है कि महात्मा गाँधी और पं० जवाहरलाल नेहरू और बाबू राजेन्द्र प्रसाद जैसे लोग सर्वथा आधुनिक विचार–दृष्टि से ही सम्पन्न थे। अतएव उनमें भाँति–भाँति का भेदभाव रचमात्र भी नहीं था। इसीलिए यह विचार–धारा ही स्वतंत्रता की साधक बनी थी और एक स्वतंत्र सर्वसमावेशी राष्ट्रवाद का स्वप्न जो उसने संजोया था, उस सपने को उसने एक सीमता तक समपूर्ण और साकार भी किया था।

अ०भा० राष्ट्रीय कांग्रेस के अन्दर की एक और उपधारा सम्प्रदायवाद की भी थी जोकि 1923 ईस्वी में होने वाले काकीनाडा कांग्रेस के अधिवेशन में उभरकर सतह पर आ गई थी। जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द, ला० लाजपतराय और पं० मदनमोहन मालवीय जैसे लोग भी थे जोकि स्वतंत्रता मिलने पर भारतवर्ष को एक हिन्दू–राष्ट्र बनाने का ही सुंखद स्वप्न देखते थे। दूसरी ओर राष्ट्रीय कांग्रेस के बाहर सावरकर और भाई परमानन्द जैसे हिन्दू महासभाई लोग भी तो इन्हीं स्वरों पर सुरताल बजा रहे थे। सावरकर ने तो 1923 ई० में ही अपनी एक पुस्तक में 'हमारा हिन्दूत्व' में यह घोषणा कर दी थी कि भारत में एक नहीं बल्कि दो–दो राष्ट्रवाद मौजूद हैं–एक हिन्दू राष्ट्रवाद तो दूसरा मुस्लिम राष्ट्रवाद है। रा०स्वयं सेवक संघ भी इस विचार–श्रृंखला का ही अनन्य उत्पाद है। जोकि भारतवर्ष को केवल हिन्दुओं का ही मूलदेश मानता है। शेष धर्म–सम्प्रदायों के लोगों को वह दोयम दर्जे का ही अधिकारी समझता है। बाद में 1936–37 ई० के बाद विधानसभाओं में आरक्षण को लेकर मुस्लिम–लीग और मि० जिन्हा भी इसी रास्ते पर चल निकले थे। अतएव यही हमारे स्वतंत्रता संग्राम की दूसरी धारा थी। 'गदर–आन्दोलन' से जो सशस्त्र क्रांतिकारी विचारधारा निकली थी, वह भी धर्मनिरपेक्ष और साम्यवादी थी। जिसके अगुआ सरदार भगतसिंह और सुभाषचन्द बोस थे। अएतव यही राष्ट्रीय कांग्रेस ही एक उपधारा मानी जाएगी। जिसने युवाशक्ति को राष्ट्रीय संघर्ष में पावन प्रेरणा प्रदान की थी। भले ही यह धारा क्षीण थी परन्तु इसका तत्कालीन प्रभाव ज्यादा था।

हमारे स्वाधीनता संघर्ष में एक तीसरी धारा और भी थी जोकि अन्तः सलिला–सरस्वती के समान समानान्तर रूपेण प्रवाहित थीं। यह भी सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनवादी धारा, जिसके अगुआ थे– डॉ० वी–आर– अम्बेदकर सरदार पटेल, चौ० छोटूराम, आ०नरेन्द्रदेव और बाद में डॉ० राममनोहर लोहिया। जोकि यह मानते थे कि इस देश का बहुमत मजदूर और किसानों से मिलाकर ही बना है। अतएव जब तक उनकी सामाजिक स्थिति और आर्थिक अवस्थाओं में सुधार नहीं लाया जाएगाऋ तब तक कोरी राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी ही होगी। अतएव भावी भारतवर्ष में सामाजिक समानता अथवा सामाजिक–न्याय और आर्थिक स्तर पर भू–वितरण जैसे क्रांतिकारी परिवर्तन जब तक क्रियान्वित नहीं होगें, तब तक केवल मताधिकार मिलने से ही हमारी आजादी पूरी नहीं होगी। इसी धारा को बाद में समाजवादी या संसोपावादी अथवा लोकदलीय या फिर किसानवादी भी कहा गया था। सन् सत्तर के दशक में डॉ० में डॉ० राममनोहर लोहिया के अकाल अवसान के पश्चात चौ० चरणसिंह ही उ०प्र० में भूपरिसीमन किवां भूवितरण जैसा क्रान्तिकारी कार्यक्रम क्रियान्वित करके ही तो किसान–मसीहा राष्ट्रीय स्तर पर बनकर उभरे थे। उनसे पूर्व संयुक्त पंजाब में चौ० दीनबंधु चौ० छोटूराम के कर्जा–मुक्ति जैसे किसान–कल्याणकारी कार्यक्रमों की ही धूम मची हुई थी।

परन्तु चौ० छोटूराम के पश्चात और भारत–विभाजन के कारण उनका कोई उत्तम उत्तराधिकारी नहीं तथा जो जोकि इस किसान–धारा को प्रादेशिक स्तर से राष्ट्रीय स्तर पर धार दे सके। भले ही चौ० चरण सिंह ने 'भूपरिसीमन और चकबन्दी' 1952 से 1954 ई० जैसे परिवर्तकामी अपने कार्यक्रमों को राष्ट्रीय स्तर पर पर मान्य करा लिया था। उ०प्र० के पश्चात ही राजस्थान से लेकर गुजरात और महाराष्ट्र से तमिलनाडु एवं आन्ध्रप्रदेश और कर्नाटक ये भूमि–सुधार लागू हो सके थे। लेकिन यहाँ पर हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि चौ० छोटूराम और चौ० चरणसिंह के कार्यकाल 1937ई० से लेकर 1967 ई० में पूरा तीस वर्षों का अन्तराल था। अतएव बीच में एक डेढ पीढ़ी का नेतृत्व ह्रास हो गया था। बल्कि चौ० देवीलाल तो और भी बाद में 1987 ई० के पश्चात ही राष्ट्रीय स्तर पर उभरकर आये थे। इस प्रकार से जो यह समाजवादी या फिर किसानवादी विचार–व्यवस्था थी, इसमें नेतृत्व का सर्वथा अकाल ही था। डॉ० राममनोहर लोहिया के बाद तो खुद समाजवादियों को भी कोई खाद–पानी देने वाला नहीं रह गया था। तभी तो वे भी 1977 ई० में जनता पार्टी के गठन से पूर्व ही भारतीय क्रांतिदल के साथ मिलकर भारतीय लोकदल में ही समा गये थे। बाद में नव्वे के दशक में वी–पी– सिंह के नेतृत्व में जनता–दल बना था। उसका जनाधार लोकदल से भी कहीं बढकर था क्योंकि उसमें दलित और मुस्लिम अल्पसंख्यक भी जुड गये थे। भरतीय लोकदल की अजगर–संघ की किसान जातियाँ तो पहले से ही साथ जुडी हुई थी। लेकिन बिना किसी व्यापक विचार विमर्श के एकाएक जो मण्ड़ल–आयोग की सिफारिशों को बी–पी– सिंह की सरकार ने लागू किया था। अतः उसका व्यापक जनाधार भी खंड–खंड होकर बिखर गया था।

जिसने अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उस पर काम और लोभ का विष नहीं चढ़ता। –रामकृष्ण परमहंस

दूसरी ओर सवर्ण साम्प्रदायिक राष्ट्रवादी धारा ने 'राममन्दिर–मुक्ति' का उग्र आंदोलन छेडकर किसानों और मजदूरों की एकता आजादी के बाद जो जनतादल की अगुआई में बनी थी, उसको धार्मिक रंग–रूप–रंगत देकर मिथ्या धर्मध्वजी सांस्कृतिक या फिर साम्प्रदायिक राष्ट्रवादी शक्तियों ने तीन–तेरह कर दिया था। वहीं से दूसरी मुख्य राजनीतिक किसान–शक्ति का पतन प्रारम्भ हो गया था। क्योंकि जो किसान और मजदूर या दलित जातियाँ आर्थिक आधार पर अब तक एकजुट थीं। अब धर्म और सम्प्रदाय के आधार पर उनको भी अलगा दिया गया था। राजपूत अपने सामन्ती स्वभाव के चलते ही भाजपा के साथ चले गये थे क्योंकि मराठी संघी ब्राह्मणवाद ने ही तो उनके सामन्ती सन्नायकों को ही राष्ट्रीय वीर शिरोमणि घोषित सदैव किया है। वे फिर अपने राज्य की रक्षा के लिए लडने वाले राणा प्रताप सिंह रहे होंऋ या फिर मराठा शिवाजी जोकि हिन्दूधर्म के रक्षक ही ब्राह्मण–पुरोहितों ने सदा से बखाने हैं। दूसरी ओर यदि सामन्त ही लेना था तो महाराजा सूरजमल को क्यों नहीं राष्ट्रीय महापुरुषों में स्थान दिया गया, जिसने मुगलों की दो–दो राजधानियों पर प्रबल प्रहार करके साम्राज्यवाद को प्रबल चुनौती दी थी– दिल्ली और आगरा को जीतकर। फिर महाराजा सूरजमल ही पूरे उत्तर–मध्य–काल में अकेले ही सर्वधर्म सद्भाव साधक लोकनायक राष्ट्रपुरुष भी थे। लेकिन हिन्दू–पुरोहितवाद को तो केवल मुस्लिम विरोधी हिन्दू सामन्त नायक ही चाहिए। उन्हें राष्ट्रीय एकता से भला क्या लेना–देना था। उनके लिए धर्मरक्षा, राष्ट्ररक्षा से सदा ऊपर ही रही है।

यहाँ पर यह कहना नहीं होगा कि समाजवादी अथवा किसानवादी दूसरी मुख्य राजनीतिक विपक्षी धारा थी चौ० चरणसिंह और चौ० देवीलाल के कुशल नेतृत्व में उ०प्र० हरयाणा, पंजाब और राजस्थान से लेकर बिहार और उडीसा तक प्रखर और प्रभावशाली हो चली थी। बल्कि चौ० चरणसिंह ने तो दक्षिण के शेर देवराज अर्स तक को अपने साथ जोड लिया था। बाद में जब जनतादल बना था तो श्री एच.डी. देवगौडा वहाँ के पहले मुख्यमंत्री (कर्नाटक) और बाद में वही जनमोर्चा की सरकार के प्रधानमंत्री तक बने थे। लेकिन चौ० देवीलाल के परिवारवाद ने बाद में जनतादल में बिखराव ला दिया था, राजस्थान विधान–सभा के चुनाव के समय। भाजपा द्वारा अडवाणी के राजरथ को बिहार के जनपथ पर श्रीलालू प्रसाद द्वारा रोकने का बहाना बनाकर जनतादल की केन्द्रीय सरकार से अपना समर्थन खींच लिया था। तब चौ० देवीलाल जी ने चन्द्रशेखर के साथ मिलकर जनता पार्टी सेकुलर बना ली थी और राष्ट्रीय कांग्रेस के सांसदों के समर्थन से श्री चन्द्रशेखर केन्द्र में प्रधानमंत्री और चौ० देवीलाल उपप्रधानमंत्री दोबारा बन बैठे थे। लेकिन वह अल्पमतीय सरकार भी क्षणजीवी ही सिद्ध हुई थी। उधर, तब जनतादल के सर्वेसर्वा श्री मुलायम सिंह यादव और लालू यादव ही बन बैठे थे। क्योंकि दो–दो महाप्रदेशों की राजसत्ता उनके हाथों लग गई थी। तभी तो उन्होंने किसान जनाधार वाले चौ० अजीतसिंह को और दलित जनाधार वाले रामविलास पासवान को भी एक किनारे कर दिया था। बस यहीं से किसान शक्तियाँ खंड–खंड होकर बादलों की भाँति बिखर गई थीं।

वरना हमारी यही मान्यता आज भी बरकरार है कि यदि कभी श्री एच–डी–देवगौडा के स्थान पर चौ० अजीतसिंह को ही दिल्ली के सिंहासन पर सुशोभित कर दिया गया होता तो कम–से–कम पश्चिमी उत्तरी भारत के जाट–किसानों के ही साथ यू–पी– और बिहार के अहीर–यादव भी जुडे रहते और राजस्थान–हरियाणा–पंजाब से लेकर बिहार और गुजरात–महाराष्ट्र से उड़ीसा तक किसान शक्तियों की एकता का ही मजबूत परचम लहराता। वैसे भी संख्या–बल की दृष्टि से भी यदि देखा जाये तो यदि श्री देवगौडा के पास उस समय कनार्टक में कांग्रेस के कमजोर होने पर (1992 के बावरी मस्जिद विध्वंस के बाद तो) उनके पास कुल जमा 18 ही संसद–सदस्य थे। इसकी तुलना में चौ० अजीत सिंह के टूटे–फूटे और बचे–खुचे भारतीय लोकदल के पास फिर भी उ०प्र० और बिहार से लेकर वर्तमान झारखंड के भी गुरू जी शिबू सोरेन और सूरज मंड़ल जैसों को मिलाकर 22 सांसद थे। यह स्थिति चौ० देवीलाल के श्री चन्द्रशेखर की जनता पार्टी कें और श्री मुलायम सिंह के राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ उ०प्र० में संविद सरकार बनाने के बाद भी थी। लेकिन पहले परिवारवाद ने चौ० देवीलाल को पुत्र मोह में डुबोकर जनतादल को दलदल बनवाया था तो बाद में मण्ड़ल–मसीहा यादव(अहीरों) की त्रिवेणी मुलायम सिंह व लालू प्रसाद यादव और शरद–यादव भी अपने ही गरूर में डूबे हुए थे। 1989 ई० के चुनावों में बिहार के मुख्यमंत्री पद न मिलने से श्री रामविलास पासवान भी यादव–बन्धुओं से रुष्ट चल रहे थे। बल्कि इस विषय में चौ० देवीलाल से श्री विश्वानाथ प्रताप सिंह अधिक दूरदर्शी थे। इसीलिए उन्होंने यह प्रस्ताव जनतादल के पार्लियामेन्ट्री(संसदीय–दल) बोर्ड के सम्मुख रखा कि जब हमने उ०प्र० में एक यादव(अहीर) व्यक्ति को मुख्यमंत्री पद पर बिठा दिया है तो बिहार में हमें किसी दलित नेता को ही चुनाव इस पद के लिए तैयार करना चाहिए। उस अवसर पर स्वयं प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह रामसुन्दर दास को ही वह नेतृत्व सौंपना चाहते थे, तो चन्द्रशेखर जी रामधन जैसे समाजवादी दलित नेता के ही पक्ष में मजबूती के साथ खडे थे। लेकिन जनतादल में बहुमत के बेताज बादशाह तो चौ० देवीलाल ही थे। अतएव उन्हीं की मनमर्जी चली और उनके 'अतिरिक्त–किसान प्रेम' के चलते श्री लालू प्रसाद यादव को ही बिहार का मुख्यमंत्री बनाया गया था। जब दो–दो सर्वाधिक जनसंख्या बल वाले राज्य अहीर–यादव बंधुओं को मिल गये थे। उधर चौ० देवीलाल ने मण्ड़ल–आयोग के कार्यान्वयन का प्रबल प्रतिरोध सार्वजनिक रूप से करके अपने पाँवों पर स्वयं ही कुल्हाडी मार ली थी क्योंकि उससे उनका जो पिछड़े किसानों में जनाधार था, वह भी छिटक गया था। दूसरी गलती उन्होंने चौ० अजीतसिंह को उ०प्र० में मुख्यमंत्री न बनाने की थी, बस तभी से जाट–किसानों की राजनीति रसातल में चली गई थी। किसी उर्दू के शायर ने कहा भी है–

''नाव वहीं डूबी जहाँ पानी बहुत कम था,

हृदय की कोई भाषा नहीं होती। हृदय से बातचीत करता है। – महात्मा गांधी

हमें अपनों ने मारा है, गैरों में कहाँ दम था।''

– त्ं– त्ं– त्ं–

''बंधु–बैर अनबन के कारण, ऐसी कुमति भई,
लैन चहत हौ दिल्ली आगरा, घर की थून दई।

(एक ब्रजवासी कवि)

जबकि उस समय चौ० अजीसिंह ने मण्ड्घ्ल–आयोग की अनुशंसाओं का सबल समर्थन करके अपनी राजनीतिक समझदारी और अग्रगामी विचार–दृष्टि का ही पूर्ण परिचय दिया था। उन्होंने जनता दल के कुल जमा 146 सांसदों में से लगभग तीन–चौथाई से यह स्वीकृति लिखित में ले ली थी कि जाट जोकि किसान जातियों का हरावल दस्ता हैऋ उसको अवश्य ही मण्ड़ल–आयेाग की सिफारिशों से लाभार्थी बनाया जाये। लेकिन उसी अन्तराल में उधर–भारत के सवर्ण सोच वाले सांस्कृतिक या साम्प्रदायिक राष्ट्रवादियों ने अपने रामरथ के अवरोध के अपराध में दण्ड़स्वरूप वी०पी० सरकार का अधबीच अकाल ही चलती कर दिया था। दूसरी ओर चौ० देवीलाल ने हरयाणा में अपने पुत्र–मोह के चलते बचे–खुचे या रहे–सहे जनता–दल को भी दोफाड़ कर दिया था। वे हरयाणा में अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री ओमप्रकाश चौटाला को ही हर हाल में मुख्यमंत्री पद पर विराजमान करना चाहते थेऋ जबकि जनतादल के विधायकों का बहुमत उनके कनिष्ठ पुत्र चौ० रणजीतसिंह के ही साथ था जोकि मिलनसार और मृदृभाषी भी थे। जबकि उनके मुकाबले में श्री ओमप्रकाश चौटाला अंहकारी और कम मिलनसार थे। फिर वे जनता में भी लोकप्रिय नहीं थे। लेकिन चौ० देवीलाल जी का यह सामन्ती दृष्टिकोण ही था कि परिवार या राजनीति का भी मुखिया तो ज्येष्ठ पुत्र ही होना चाहिए। अब तो चौ० ओमप्रकाश चौटाला ने इस सिद्धान्त का भी शीर्षासन करा दिया है।

उधर राजस्थान के विधानसभाई चुनावों में वे चौ० साहब अपने ज्येष्ठ पौत्र अजय के लिए बजाय दाताराम गढ के नोहर की सीट के लिए अड़ गये थे। जबकि जनतादल के प्रादेशिक नेतृत्व ने उन्हें किसी भी जाट बहुल सीट को लेने का विकल्प नौहर के बदले में दे दिया था। ऐसी सीटें हरयाणा से सलंग्न हनुमानगढ–संगरिया–पीलीबंगा–कालीबंगा–भादरा वगैरहा थी। लेकिन चौ० साहब अपने स्वपौत्र अजय की ससुराल नौहर पर ही अड़कर बैठ गये थे। जबकि वह राजस्थान के क्रांतिकारी किसान नेता चौ० कुंभाराम आर्य की पुत्रवधु सुचित्रसिंह की ही परम्परागत सीट थी। जब वह विधान–सभाक्षेत्र चौटाला परिवार को दहेज में चुनाव लड़ने के लिए नहीं मिला था तो फिर इसी मतभेद को लेकर चौ० देवीलाल ने जनतादल से स्वयं को अलग–थलग करके जनता पार्टी का दामन थाम लिया था। फिर हरयाणा में भी महम–कांड के कारण हरियाणवी जाटों में भी जो उनका रहा–सहा जनाधार जो था, वह भी दरक गया था।

अतएव 1991 ई० के विधानसभाई चुनावों में वे निरे निराधार–नारायण ही तो सिद्ध हुए थे। वहाँ भारत के केन्द्रीय स्तर पर नेतृत्व देने के सुनहरी सपने संजोते थे और कहाँ एक प्रादेशिक क्षत्रप ही बनकर विपक्ष में बैठना पडा। जनता पार्टी सेक्युलर को तब केवल 12 ही स्थान उस चुनाव में मिले थे तो राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी को बहुमत के कारण हरयाणा में एकबार पुर्नजीवन मिल गया था। चौ० बंसीलाल की हरियाणा विकास पार्टी ही मुख्य विरोधी दल बन गई थी। 32 स्थान पाकर अगली बार 1996 ई० के चुनाव में भाजपा के साथ गठबन्धन करके उसी ने बहुमत पाकर हरयाणा में अपनी सरकार बनाई थी। जिसको अवसरवादी भाजपा के लोगों ने 1998 ई० में गिरवा दिया था और 1999ई० में कारगिल युद्ध का उन्माद उत्पन्न करके 1999 ई० में चौटाला साहब के इण्डियन नेशनल लोकदल के साथ गठबन्धन करके बहुमत की सरकार बनाई थी। तभी से साम्प्रदायिक शक्तियों के पाँव मजबूती के साथ सघन शहरी सवर्णों में जम गये थे और किसान शक्तियों के नायक केवल क्षेत्रीय क्षत्रप भर बनकर ही यू–पी– से बिहार और कर्नाटक तक रह गये थे।

वह तो भला हो कि 2004 के विधान सभाई चुनावों में राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी को बहुमत मिलने पर भी इटली के गाथ(जाट) कबीले से सम्बन्धित श्रीमती सोनिया गाँधी, राष्ट्रीय अध्यक्ष कांग्रेस ने चौ० भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को प्रदेश की कमान सौंपकर भजनलाल के भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाई थी और कांग्रेस में भी नया किसान–नेतृत्व स्थापित कर दिया था प्रादेशिक स्तर पर। राजस्थान में भले ही उनसे जाटों की उपेक्षा ही हुई। वे संयोग से अशोक गहलौत को भी जाट किसान ही समझती रहीं है, जबकि कांग्रेस की राजपूत लॉबी श्री अर्जुन सिंह और दिग्विजय सिंह ने उनको राजपूत समझकर ही केन्द्रीय पर्यवेक्षक बनकर उनको प्रदेश का नेतृत्व सौंपा था।

उधर मुलायम सिंह और मायावती के मध्य में जो गठबन्धन 1993 ई० के विधान सभाई चुनावों में हुआ था, उसमें वही वहाँ की राजनीति के नवोदित नक्षत्र बनकर चमके थे तो चौ० चरणसिंक की जो वोटों की विरासत अथवा किसान जनाधार था–यादव–कुर्मी–कोयरी और लोधे तथा गूजर जैसी किसान जातियों काऋ वह भी उधर ही खिसक गया था। तब चौ० अजीतसिंह अकेले जाट और कुछ मुस्लिम किसानों के समर्थन से ही अपना राजनीतिक वजूद बचाये हुए थे, जैसे–तैसे केन्द्र सरकार में मंत्री बनकर।

परिस्थितिवश 2013 ई० में मुजफ्फरनगर में दंगों का दावानल भडका था, उसने उनका रहा सहा वोट–बैंक भी छीन लिया था क्योंकि साम्प्रदायिकता के अजगर ने उसको भी निगल लिया था। तब सारा ही समाज हिन्दू–मुस्लिम में बँट गया थाऋ बजाय वर्गों अथवा व्यवसायों के। उसी का परिणाम केन्द्रीय स्तर तक साम्प्रदायिक शक्तियों का विस्तार और सत्ता–रोहण भी हो गया था। तब से किसान राजनीति की जो मध्यमार्गी और धर्मनिरपेक्ष एवं समाजवादोन्मुख जो जनधारा थी। वह मध्यवर्गीय मरूस्थल में कहीं सरस्वती के समान समा गई है, हमारी अपनी यही आज भी मूल मान्यता है कि यदि अकेली जाट जाति भी पंजाब व हरयाणा और उ०प्र० से राजस्थान तक किसी एक राजनीतिक मंच या फिर दल में संगठित हो जाए तो वही किसान–शक्तियों को अपार और अक्षय ऊर्जा देने वाला इंर्जिन

जुआ सुख, संपत्ति और समय इन तीनों का, जो जीवन के लिए अति मूल्यवान है, नाश करता है। –अज्ञात

बन सकती है। लेकिन इन अर्धसामन्ती चरित्र वाले किसान क्षत्रपों का परिवारवाद और व्यक्तिगत अंहकार ही इनकी एकता का एकमात्र अवरोधक है। यदि जाट जन भी एक परचम तले एकजुट हो जाये तो उनके साथ गूजर–अहीर–माली–लोधे–कुर्मी और कुशवाह–कोयरी जैसी किसान जातियाँ स्वतः ही उनके साथ लामबन्द हो जाएँगी।

आजकल किसान जातियों के बिखराव का ही तो सत्ता–लाभ यहाँ पर साम्प्रदायिक शक्तियाँ उठा रही हैं। वरना उ०प्र० में चौ० चरणसिंह ने सत्तर के दशक में जिन शहरी सवर्णों की जहरीली जमात को 97 से 17 विधानसभाई स्थानों पर समेट दिया था और लोकसभा के सन् 1980 के चुनाव में महज तीन सांसदों तक समेट दिया था। आज साम्प्रदायिकता का वही विषम विषधर अपना शेषनाग जैसा फन फैलाकर इन्द्रप्रस्थ के इन्द्रासन तक सत्तासीन हो गया है। राष्ट्रीय कांग्रेस में तमाम कमियों के बावजूद भी कम से कम एक सर्वसमावेशी राष्ट्रवाद और धर्मनिरपेक्ष समाजवादी राष्ट्र की संकल्पता तो है ही। उस सबके रहते भी न जाने क्यों हमारी किसान जातियाँ बजाय उस मध्यमार्गी सर्वसमावेशी राजधारा के वे शोषक सवर्णों की साम्प्रदायिक राजनीति के ही सहज शिकार बन बैठे हैं। यदि आज भी किसान नेता परिवारवाद और जातिवाद से ऊपर उठकर एक हो जायें तो वे भारतीय राजनीति को पुनः एक स्वस्थ विकल्प दे सेकते हैं। लेकिन हमारे साथ वही हुआ है–

''जिन्हें हम हार समझे थे गला अपना सजाने को
वही अब नाग बन बैठे हमें ही काट खाने को।''
इस घर को आग लग गई घर के चिराग से,
दिल के फफोले जल उठे दिल के ही दाग से।

ये सांस्कृतिक या हिन्दू राष्ट्रवाद का जो लॉली–पोप साम्प्रदायिक शक्तियों के द्वारा आजकल जो श्रमिक शक्तियों को दिया जा रहा है, यह सब एक दिन उनके लिए महज छलावा ही सिद्ध होगा। क्योंकि बजाय व्यवसायों की एकता के धार्मिक या साम्प्रदायिक एकता के आधार पर ही आज उनको आपस में अलगाया जा रहा है। जबसे यह धर्म–सम्प्रदाय की विषैली राजनीति परवान चढी है, तब से ही भारतीय राजनीति में श्रमिक शक्तियाँ हाशिये पर चली गईं हैं। आजकल क्या कारण है कि किसान–वर्ग का एक भी नेता राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित नहीं है। दलित भी अब उनके ही पिच्छलग्गू बनने के लिए विवश और आतुर हैं। क्या कारण है कि जो शहरी अनुत्पादक सवर्ण शक्तियाँ राजनीति के केन्द्र से हाशिये की ओर तेजी से चली जा रही थी और प्रदेशों से लेकर केन्द्र तक की राज्य–सत्ता में श्रमिक शक्तियों को सशक्त हस्तक्षेप बढता चला रहा था। अब वही किसान और मजदूर शक्तियाँ प्रदेशों में भी दम तोडती चली जा रही हैं। क्या कारण है कि पिछले दो दशकों से कुर्मी पटेल गुजरात की सत्ता से दूर हैं। एक प्रतिशत आाबादी का प्रतिनिधित्व करेन वाला जैन बनिया उनके सिर पर सवार है। तो कर्नाटक में बोवलिग्गा किसानों की अब यही हालात इस साम्प्रदायिक राजनीति ने बना दी है। आंध्रप्रदेश में अब नायडुओं की भी यही स्थिति है।

उत्तरपद्रेश और बिहार जोकि कभी देश का नेतृत्व करते थे वहां की प्रमुख किसान जाति के लोग अहीर–यादव भी आज परिधि पर पटक दिये गये हैं। हरयाणा और पश्चिमी उत्तर–प्रदेश में आज जाट जनशक्ति असहाय है और सत्ता से सर्वथा बाहर है। मराठा महाबीर जोकि वहाँ की आबादी के लगभग तीस–तैंतीस प्रतिशत अकेली किसान जाति–वर्ग है। वहाँ पर भी दो प्रतिशत का एक शहरी सवर्ण सत्ता का स्वामी बना बैठा है और तो और हरयाणा में तो एक पूर्व शरणार्थी अब (पुरुषार्थी) ही आज सत्ता का सम्बल पाकर शरणदाता बनकर इठला रहा है और किसानों को अँगूठा दिखा रहा है।

पूँजीवादी और साम्प्रदायिक शक्तियों ने आज लोगों का दीन–ईमान नैतिकता और ईमानदारी तथा उनका स्वाभिमान और स्वतंत्र चिन्तन तक खरीद व छीन लिया है। उनकी कृषि–उपजों का उचित मूल्य देने के बजाय बनिया–व्यापारी सत्ता–पुरुष उनको दो–दो हजार की रियायत के रूप में रिश्वत चुनावों के ऐन मौके पर परोस रहे है। उन्होंने किसानों में भी एक नवधनाढ्य वर्ग को सत्ता और दौलत का दलाल बनाकर अपने ही वर्गों के विरोध में लगभग सभी जितायों में खड़ा कर दिया है। और तो क्या, हमारी जाट–गूर्जर और अहीर जैसी मध्य किसान जातियों में पिछली कांग्रेस सरकार की अग्रगामी कार्यनितियों के कारण जो सम्पन्नता एकाएक आयी थी, उसी ने इनके एक वर्ग को साम्प्रदायिक सत्ता का अभिकर्ता या एजेन्ट बना दिया है। इस वर्ग का उद्देश्य कोई किसान– कल्याण अथवा वर्गहित या समाज–निर्माण नहीं है। ये लोग केवल व्यक्तिगत पद और प्रतिष्ठा के लिए ही राजनीति में उतरे हैं। जोकि अधिकाँश में डीलर हैं, वही आजकल सर्वाधिक सबल लीडर भी हैं। क्योंकि उन्हीं के पास भूविक्रय से एकाएक लक्ष्मी की जो अपार वर्षा हुई है, अब वही रैलियों और थैलियों का प्रबन्ध कर सकते हैं। वर्ग–बोध अब विलुप्त हो रहा है। वर्गों या व्यवसायों की एकता का स्थान अब हिन्दू–एकता ने ले लिया है। यह हिन्दू राष्ट्रवाद या सांस्कृतिक राष्ट्रवाद इन शहरी सवर्ण साम्प्रदायिक शक्तियों के हाथ में कमेरी जातियों को धार्मिक आधार पर बाँटने का अमोघ ब्रह्मास्त्र है। कहाँ एक और कश्मीर में धारा 370 के बाद सारे नागरिक अधिकारों को जब्त कर लिया गया है, दूसरी ओर पर्वतीय प्रान्तों में धारा 371 लागू है। जिसके आधार पर कोई भी परपांतीय व्यक्ति एक इंच जमीन भी नहीं खरीद सकता है। अतः कश्मीर में 1927 से ही यह कानून लागू था और धारा 370 के आधार पर ही जम्मू–कश्मीर प्रान्त का विलय भारतीय संघ में हुआ था, जिसको बिना वहाँ की विधानसभा की सहमति के ही केन्द्रीय सरकार ने समाप्त कर दिया। इस प्रकार से आज संघवाद और बहुलवाद दोनों खतरे में है। विरोधी दलों की सरकारों के विधायकों को खरीदकर और उनसे त्याग–पत्र दिलवाकर गोआ से लेकर कर्नाटक और मध्यप्रदेश तक विपक्षी सरकारों का अकाल पतन दल बदल कानून को निष्प्रभावी बनाकर किया जा रहा है। अतएव आज भारत में जनतंत्र भी लम्बी–लम्बी श्वांसें ले रहा है। सारे संवैधानिक संस्थान आज सरकारी और एकपक्षीय हो चले हैं। अतएव चुन–चुनकर विपक्षियों पर ही ईडी और इन्कम टैक्स के छापे मारकर उनको भयभीत और कमजोर किया जा रहा है, उधर बैंक तक दिवालिया हो चले हैं।

एक सच्चे, सैनिक को सेन्य और आध्यात्मिक प्रशिक्षण, दोनों की ही जरूरत होती है। –सुभाष चंद्र बोस

राधा स्वामी ब्यास के संस्थापक बाबा जैमल सिंह जी महाराज

– रामबीर सिंह दहिया, ई.टी.ओ. (रिटायर्ड)

हमें इस बात का बड़ा गर्व है कि हमारी जाति में अनेकों शूरवीर योद्धा, देशभक्त और क्रांतिकारी पैदा हुए हैं। हमारी जाति में अनेकों ऐसे संत महात्मा भी अवतरित हुए हैं। जिन्होंने आध्यात्मिक क्षेत्र में अपना एक अलग मुकाम हासिल किया है। बाबा जैमल सिंह एक ऐसे संत हुए हैं जिनका नाम अध्यात्मिक जगत में बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। यही वे संत हैं जिन्होंने राधा स्वामी सत्संग ब्यास की स्थापना की। इनके शिष्य इन्हें बाबा जैमल सिंह के नाम से संबोधित करते हैं।

जन्म और बाल्य अवस्था

बाबा जैमल सिंह का जन्म गांव–घुमान, तहसील बटाला, जिला गुरदासपुर के एक प्रतिष्ठित जाट परिवार में सन् 1839 में हुआ। आपके पिता का नाम सरदार जोधा सिंह तथा माता का नाम श्रीमती दया कौर था। बचपन से ही आपकी वृति परमात्मा की तरफ थी। आरंभ से ही आपका हृदय ईश्वर भक्ति से परिपूर्ण था। आपके गांव में संत नामदेव का एक स्थान था जिसे देहरा कहा जाता था। इस देहरे के महंत उस समय बाबा खेमदास जी हुआ करते थे। आप बचपन से ही संत नामदेव के देहरे पर जाया करते थे और वहां हो रही आध्यात्मिक चर्चा को सुनते थे और सिर्फ सुनते ही नहीं थे बलिक उसमें हिस्सा भी लेते थे। बाबा खेम दास इनकी लगन को देखकर बड़े आश्चर्य चकित होते थे कि किसी के अंदर ईश्वर के प्रति इतना प्रेम भी हो सकता है। बाबा खेमदास इन्हें परमात्मा की एक खास आत्मा समझने लगे और इन्हें बड़े धैर्य और प्रेम के साथ गुरुवाणी पढ़ाने लगे। बहुत जल्दी पूरी गुरुवाणी आपको याद हो गई और बड़ी शुद्ध भाषा में आप गुरुवाणी का पाठ करने लगे। आपकी आध्यात्मिक जिज्ञासा निरंतर बढ़ती रही और आप आध्यात्मिक सत्य की खोज में इतना डूब गए कि घर के काम–काज, खेती बाड़ी की तरफ आपका जरा भी ध्यान नहीं रहा। यह सब देखकर आपके पिता ने आपको साधु संतों से और देहरे से दूर रखने का प्रयत्न किया लेकिन आप सफल नहीं हुए और जैमल सिंह का संपर्क निरंतर साधु संतों से बना रहा। इनके पिता चाहते थे कि बेटा इन सब चक्करों को छोड़कर खेतीबाड़ी करे लेकिन बात नहीं बनी। जब सब कोशिशें बेकार हो गई तो इनके पिता ने इनको इनकी बहन बीबी ताबो के पास गांव सठियाला भेज दिया, ताकि ये देहरे से दूर रहे। लेकिन ईश्वर के प्रेमी को कौन रोक सकता है। वह तो सात तालों के बावजूद नहीं रूक सकता, गांव बदलनें से क्या होता है। आपका रोम–रोम सत्य की पुकार कर रहा था। सठियाला गांव में एक योगी था। आपने उनके पास जाना शुरू कर दिया और उससे योग की शिक्षा लेने लगे। बीबी ताबो ने उसे वापस धुमान गांव भेज दिया। उसे डर था कि जैमल कहीं साधु न बन जाए। ६ ूमन आने के पश्चात पिता ने उसकी शादी करने का विचार किया ताकि ये गृहस्थ में बंध जाए लेकिन आपने दृढ़ता के साथ विवाह से इन्कार कर दिया। पिता इनके स्वभाव से परिचित थे इसलिए उन्होंने शादी का विचार छोड़ दिया। बाबा जैमल सिंह आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

सत्य की खोज

अब तक आपकी आयु तकरीबन चौदह वर्ष की हो गई थी। इसी समय आपके पिता की मृत्यु हो गई जिसके कारण आपके अंदर वैराग की भावना और तेज हो गई। इस दौरान आपने गुरुग्रंथ साहब का गहराई से अध्ययन करना शुरू कर दिया और आपने पाया कि गुरुग्रंथ साहब में जगह–जगह गुरु की आवश्यकता पर बल दिया गया है। हर जगह यही उपदेश दिया गया कि गुरु के बिना ज्ञान नहीं हो सकता। आपने पढ़ा ''भाई रे गुरु बिन ज्ञान न होई। पूछो ब्रह्मा नारद वेद व्यास कोई'' कि ब्रह्मा के पुत्र नारद और वेद व्यास के पुत्र शुकदेव मुनि को जन्म से ही ज्ञान था। जब उनको भी गुरु धारण करना पड़ा तो हम तो बहुत ही साधारण इन्सान हैं। कहते हैं कि शुकदेव मुनि को जन्म से ही ज्ञान थाा, उन्हें गर्भ ज्ञानी कहा जाता है। उन्होंने राजा जनक को गुरु बनाया और राजा जनक के भी आगे गुरु थे जिनका नाम मुनि अष्टावक्र था। आपने पढ़ा कि राम के गुरु मुनि वशिष्ठ थे और कृष्ण के गुरु महर्षि संदीपपनी थे। आपको यह पक्का यकीन हो गया कि आध्यात्मिक रास्ते पर चलने के लिए गुरु की आवश्यकता है और ऐसे गुरु की आवश्यकता है जो परमात्मा को जातना हो, उससे मिलाप करने के रास्ते को जानते हो और दूसरों को भी उस रास्ते का ज्ञान दे सकता हो। अब आप घरबार छोड़कर अपनी माता को समझा बुझाकर गुरु की खोज में निकल पड़े।

गुरु की खोज

बाबा जैमल सिंह ने बड़ी गंभीरता और दिल की गहराई से गुरु की तलाश आरंभ कर दी। जहां कहीं भी आपको ये पता चलता कि फलां–फलां जगह कोई अच्छा साधु आया हुआ है तो आप वहीं पहुंचते। आप पैदल ही चला करते थे क्योंकि उन दिनों आवागमन के इतने साधन उपलब्ध नहीं थे। आपने लंबी–लंबी यात्राएं कीं। एक–एक जगह जाने में महिनों लग जाते थे। लेकिन आपने अपनी खोज जारी रखी। आपका दृढ़ संकल्प ही आपको शक्ति प्रदान करता था। आप जगह–जगह

आदि से अंत तक हमारा जीवन एक प्रकार की मृत्यु है जिसका अर्थ है अधिक विशाल जीवन। –डा. राधाकृष्णन

भटकते हुए एक दिन ''होती मर्दान'' (पाकिस्तान) नामक जगह पर पहुंचे। वहां आपको पता चला कि साधुओं का एक जत्था ऋषिकेश जा रहा है और एक साधु ने कहा कि आप हमारे साथ चलिए। ऋषिकेश और उसके आस–पास अनेकों साधु रहते हैं, शायद आपकी तलाश पूरी हो जाए। ऋषिकेश में आप अनेक साधुओं से मिले लेकिन तसल्ली नहीं हुई। किसी ने बताया कि यहां से ऊपर पहाड़ों में कोई 30–40 मील आगे एक साधु रहता है जो बहुत पहुंचा हुआ है। आप उस साधु के पास गए तो उस साधु ने आपकी लग्न और तड़प को देखकर कहा कि मुझे भी ज्ञान नहीं है लेकिन मुझे ये आभास हुआ है कि आगरा में एक संत हैं जो 17–18 वर्ष से तपस्या में लीन थे, वे अब प्रकट हुए हैं वे शायद आपका मार्ग दर्शन कर सकें। उनके पास जाओ।

गुरु से मुलाकात

बाबा जैमल सिंह को भी लगा कि शायद उसे उसकी मंजिल मिल गई है। वे उसी समय आगरा के लिए चल दिए। आगरा पहुंचकर उन्हें अपनी भूल का अहसास हुआ कि साधु का पता तो उन्होंने पूछा ही नहीं। अब कैसे उस संत की तलाश करें लेकिन जिनको लग्न होती है उनकी सहायता स्वयं ईश्वर करते हैं। जैमल सिंह थक भी चुके थे तो वे यमुना के किनारे सुस्ताने लगे। उसी समय उन्होंने दो व्यक्तियों की बातचीत सुनी जो उसी संत की बात कर रहे थे और उनके सत्संग में जाने की बात कर रहे थे। जैमल सिंह को बहुत खुशी हुई और उनके साथ–साथ सत्संग में पहुंच गए। सत्संग में जाकर आपने देखा कि एक तेजस्वी संत सामने बैठा है। आपने जब उनके दर्शन किए तो आपको अपार शांति का अनुभव हुआ और ऐसा लगा कि जैसे उनकी तलाश पूर्ण हो गई है और उन्हें सच्चे गुरु मिल गए हैं।'' जैमल सिंह ने उनका सत्संग सुना और आपकी सारी जिज्ञासाएं, शांत होती चली गई। आपके मन में सच्चा गुरु पाने की जहां सच्ची खुशी थी वहीं एक शंका भी थी कि मैं तो सिक्ख हूं और यह मुझे भेष से हिंदू लगता है। मुझे इसे गुरु ध ाारण करना चाहिए या नहीं, ये कशमकश आपके अंदर चल रहा था। सत्संग खत्म हो गया। सब लोग उठकर चले गए लेकिन आप बैठे रहे। सत्संग के बाद स्वामी जी महाराज ने पूछा के बेटा क्यों हिंदू सिख के फेर में पड़े हुए हो। ये दुविधा है आध्यात्मिकता में धर्म का कोई अर्थ नहीं है। स्वामी जी महाराज की बात सुनकर आपका सारा मैल जैसे धुल गया और आपको लगा कि सतगुरु होता है हिंदू या सिक्ख नहीं। आपने उनके चरण छूए और अपना शिष्य स्वीकार करने की प्रार्थना की जिसे स्वामी जी ने स्वीकार कर लिया। स्वामी जी ने उन्हें दीक्षा दी और परमात्मा का ज्ञान दिया। जैमल सिंह ने प्रार्थना की कि वह चाहता है कि वह आपके पास आपके चरणों में रहे और अध्यात्मिक अभ्यास करे। इस पर स्वामी जी महाराज ने कहा कि इस तरह से तो तुम दूसरों पर बोझ बन जाओगे और तुम्हारे कर्मों का बोझा बढ़ता जाएगा। दूसरों के अन्न पर पलना व्यक्ति को शोभा नहीं देता इसलिए जाओ और कोई कार्य खोजो। कर्म भी करो और परमार्थ भी कमाओ।

फौज में भर्ती होना

जैमल सिंह ने अपने गुरु की आज्ञा का पालन किया और सन् 1856 में फौज की सिक्ख पलटन में भर्ती हो गए। आपकी पलटन का तबादला एक जगह से दूरसी जगह होता रहा लेकिन पलटन चाहे कहीं भी हो जब भी आपको छुट्टी मिलती आप अपने गुरु के पास आते और सारी छुट्टियां वहीं बिताते। इसी तरह से समय बीतता रहा। आप स्वामी जी महाराज के प्रिय शिष्य बन गए। अक्टूबर 1877 में आप छुट्टी लेकर आए और छुट्टियों के बाद वापस जब आने लगे तो स्वामी जी ने कहा कि अगली छुट्टियों तक मैं आपको नहीं मिलूंगा। मेरे जीवन का समय समाप्त हो रहा है। मेरे मन से आप विदा हुए और उसके बाद आप वहां नहीं गए। सन् 1889 में आप फौज से रिटायर होकर आगरा गए। वहां आपको बताया गया कि स्वामी जी महाराज यह आज्ञा देकर गए हैं कि जब भी जैमल सिंह आए तो उसको बताना कि यह गुरु का अंतिम आदेश था कि जैमल सिंह पंजाब में सत्संग का कार्य शुरू करे और राधा स्वामी सत्संग का प्रचार करो।

ब्यास में आश्रम

जैमल सिंह अपने गुरु की आज्ञा मानते हुए ब्यास नदी के किनारे एक झोपड़ी बनाकर रहने लगे। वहां काफी शांत जगह थी। चारों तरफ कंटीली झाड़ियां पेड़ और नाले थे। काफी जंगल था और दूर–दूर तक कोई आबादी नहीं थी, वे ब्यास स्टेशन से कुछ रोटियां खरीद लाते और पेड़ से बांधकर लटका देते। जब भी भूख लगती तो एकाध रोटी नदी के पानी में भिगोकर खा लेते और भगवान के भजन में मस्त रहते। लेकिन संतों की सुगंध तो फैल ही जाती है। धीरे–धीरे लोग वहां आने लगे और वे प्यार से इन्हें बाबा जी पुकारने लगे। अब आप जैमल सिंह से बाबा जैमल सिंह बन गए और आपने वहां खुले में ही सत्संग करना शुरू कर दिया। शुरू में सत्संग सुनने वालों की संख्या 15–20 हुआ करती थी। धीरे–धीरे ये संख्या बढ़ती गई। इस संख्या में इनका खास शिष्य भी था जिसका नाम सावन सिंह था। जिन्होंने राधा–स्वामी सत्संग का आगे प्रचार बढ़ाने और ब्यास डेरे का विकास करने में काफी योगदान दिया। राधा–स्वामी सत्संग ब्यास के जो भी मुखिया बने सभी जाट परिवार से ही बने हैं। संख्या के साथ–साथ हर वस्तु का विकास होता चला गया। आपने 29 दिसंबर 1903 को सुबह भौतिक शरीर का त्याग कर दिया। आज जहां एक झोपड़ी थी वह जगह एक विशाल बस्ती बन गई जो 15–20 मील में फैली हुई है। अब इस जगह का नाम डेरा बाबा जैमल सिंह है जहां सत्संग में लाखों लोग आते हैं और अपने जीवन को सफल बनाते हैं।

जिसके चित में कभी क्रोध नहीं आता और जिसके हृदय में सदैव परमेश्वर विराजमान रहता है, वह इंसान ईश्वर तुल्य है।

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat girl (DOB 90) 30/5'6" M.A. English, LLB. Convent educated. Engaged as Researcher in Punjab & Haryana High Court. Younger brother studying in Canada. Father officer. Avoid Gotras: Khatri, Chhillar, Lather. Cont.: 9876819760.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1988) 32/5'3" Post Graduate Employed as English Teacher in Chandigarh Administration. Father retired from Govt. of Haryana. Preferred officer or good statues match from tricity settled family. Avoid Gotras: Malik, Kundu. Cont.: 9417093860, 7009239419*
- *SM4 Jat Girl 26/5'5" M.Com., UGC, NET, Employed as Assistant Professor. Preferred match in Govt. job. Avoid Gotras: Kadian, Nehra, Sangwan. Cont.: 9569156984*
- *SM4 Jat Girl (DOB 08.11.92) 27/5'9" B.A., LLB. from KUK. LLM (Business Law) from DDE KUK. Doing practice in Delhi High Court. Mother superintendent in Haryana Tourism. Avoid Gotras: Dalal, Ahlawat, Rana. Cont.: 8527067602*
- *SM4 Jat Girl (DOB September. 93) 26/5'4" B.A., B.Ed. Employed as Lecturer in Political Science in Delhi Govt. Avoid Gotras: Panghal, Dhanda, Sheoran. Cont.: 7009457235*
- *SM4 Jat Girl (DOB 02.09.88) 31/5'5" B.Tech. ECE from KUK. Pursuing PGDMM (NMIMS). Working experience in teaching. Worked in Jindal Industry Hisar. Father retired Executive officer from MC. Rohtak. Avoid Gotras: Sangwan, Hooda, Sehray. Cont.: 9050656227*
- *SM4 Jat Girl (DOB 03.09.90) 29/5'2" BCA, B.Ed, MSC (CS). Avoid Gotras: Gahyan, Lamb, Nandal. Cont.: 7696771747*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 28/5'4" M.Sc. Physics, B.Ed, PTET, Employed as Teacher in private school, Chandigarh. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Singhmar. Cont.: 9463330394*
- *SM4 Jat Girl 26/5'8" M.A. English. Stenography in both English & Hindi. Employed as Junior Scale Stenographer in Irrigation Department Haryana at Headquarters Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Sangwan, Dahiya. Cont.: 9217884178*
- *SM4 Jat Girl (DOB 25.10.92) 27/5' B.Tech (Electronic & Communication). Avoid Gotras: Dhayal, Punia, Phogat. Cont.: 9416270513*
- *SM4 Jat Girl (DOB 16.10.94) 25/5'4 " B.Tech (ECE) from KUK, Pursuing MBA regular . Father Headmaster, Mother Govt. teacher. Avoid Gotras: Narwal, Kadian, Ranjha. Cont.: 9416821023*
- *SM4 Jat Girl (DOB 14.10.93) 26/5'3 " B.Sc. Non-Medical, M.Sc. Math. Avoid Gotras: Joon, Bakhal, Galyan, Sangwan. Cont.: 9467311110*
- *SM4 Jat Girl (DOB 24.06.93) 26/5'3 " M.Sc, MCA., GIS, B.Ed. Math, English. Employed as PGT Geography. Avoid Gotras: Joon, Khatkar, Rathi. Cont.: 9050001939*
- *SM4 Jat Girl (DOB 06.09.93) 26/5'3 " M.A economics, Diploma in Computer Education. Avoid Gotras: Malik, Kajla, Kundu. Cont.: 9868738954*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.06.92) 27/5'5 " BCA, MCA, HTET. Employed as Programmer in Panchayat Department. Avoid Gotras: Redhu, Deswal, Sandhu. Cont.: 9728108634, 9991866084*
- *SM4 Jat Girl (DOB 25.04.93) 26/5'4 " MSc. Nursing. Employed as Lecturer in Swami Devidayal Nursing College Barwala. Avoid Gotras: Pilania, Malik, Singrowa. Cont.: 9896813684*
- *SM4 Jat Girl 28/5'2 " B.Sc., B.Ed, MSc. Avoid Gotras: Bura, Lamba, Bolan. Cont.: 9872511366*
- *SM4 Jat Girl (DOB 04.06.91) 28/5'4" B.Sc., MSc, PhD. from DTU. Employed in P.U. as Guest faculty. Preferred Govt. job of Education and Defence line. Avoid Gotras: Khatri, Punia, Chhikara. Cont.: 8802251151*
- *SM4 divorced Jat Girl (DOB 25.01.79) 41/5'3" Employed as Teacher in Haryana Government. Avoid Gotras: Vaze, Nain. Cont.: 9417312560*
- *SM4 Jat Girl (DOB 17.09.95) 24/5'4" M.Com, B.Ed, Doing NET. Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga, Dhull. Cont.: 9468407521*
- *SM4 Jat Girl (DOB 25.04.92) 27/5'3" M.Sc. (Math & Computer Science), MA Economics. B.Ed, HTET, NET clear. Avoid Gotras: Dalal, Rathi, Dhull. Cont.: 8295805809*
- *SM4 Jat Girl (DOB 31.10.95) 24/5'4" BDS, MPH (Kerala). Avoid Gotras: Nain, Dhimara, Mehla. Cont.: 9991941885, 9416773199.*
- *SM4 Jat Girl (DOB June,1987) 33/5'2" B.Tech (CSC). Employed as Software Developer (Delivery Manager) in Chandigarh with Rs. 18 lakh package PA. Father retired from U.T. Chandigarh. Two elder sisters well settled abroad. Avoid Gotras: Jaglan, Gahlan, Kadian. Cont.: 7837113731*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1988) 32/5'3" MA, Economics, PhD (Economics) NET clear. Serving in Chandigarh as Assistant Professor. Father class-II officer retired from Haryana Government. Brother settled in USA. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Jatrana. Cont.: 9988224040*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.09. 92) 27/5'2" B.Sc (Math) M.Sc (Math with computer science). B.Ed, HTET, CTET, RTET qualified. Preparing for NET. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhatarwal. Cont.: 8901273699*
- *SM4 Jat Girl (DOB18.08. 96) 23/5'2" B.Sc. Hons. (Zoology). Pursuing M.Sc. Hons. (Zoology) from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhatarwal. Cont.: 8901273699, 9812578246*
- *SM4 Jat Boy (DOB13.01.91) 29/5'8" MBA, Employed as P.O. in Bank of Baroda. Avoid Gotras: Narwal, Mann, Duhan. Cont.: 9417579758*

धैर्य रखना मुश्किल होता है, लेकिन उसका फल मीठा होता है। – ससो

- *SM4 Jat Boy (DOB18.09.88) 31/6' B.Com, C.A. Doing practice as C.A. Father retired S.I. Chandigarh. Family settled in Chandigarh. Preferred qualified C.A. girl. Avoid Gotras: Mann, Bhalra, Hooda. Cont.: 9417213500*
- *SM4 Jat Boy (DOB 20.12.90) 29/5'10" B.Tech. Civil. Employed as clerk in Haryana Government. Avoid Gotras: Panghal, Dhanda, Sheoran. Cont.: 7009457235*
- *SM4 Jat Boy (DOB 08.09.86) 33/6' B.Tech. Employed as Technical Archited Company, Nokia, Bangaluru with Rs. 21-22 lakh package PA. Required tall, beautiful girl. Avoid Gotras: Chhikara, Rathi, Dahiya. Cont.: 9416234193, 7888463740, 9416935291*
- *SM4 Jat Boy (DOB 04.10.88) 31 PhD (Management) Job & Permanent Resident (PR) of Canada from 7/2019. (Now for short visit in India) Former two times class-I officer in India. Father class-I officer retired from Haryana Govt. Avoid Gotras: Malik, Jhanjharia, Hooda. Cont.: 9876155702*
- *SM4 Jat Boy (DOB 26.09.91)28/5'8" B.A. LLB Advocate in Punjab & Haryana High Court. Three houses, three acre land in village, three shops and three plots. Avoid Gotras: Poonia, Nain, Sihag. Cont.: 9316131495, 7973059762*
- *SM4 Jat Boy (DOB 18.10.90) 29/6'1" B. Tech. Employed as Inspector in CBI. Preferred highly qualified girl with at least 5'4" height. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal, Mor. Cont.: 9023492179*
- *SM4 Jat Boy (DOB July, 91) 28/5'11" B.Tech., M.Tech. in Civil Engineering. Working in MNC Gurgaon. Avoid Gotras: Rathi, Gahlan. Cont.: 9815094054*
- *SM4 Jat Boy (DOB Feb. 89) 31/5'11" MBBS, Doing MD. Avoid Gotras: Sangwan, Dhatarwal, Legha. Cont.: 8058980773.*
- *SM4 Jat Boy (DOB19.02.90) 30/5'11" B.A. LLB. Avoid Gotras: Loura, Bharman, Sindhu, Deswal, Duhan. Cont.: 9463653724*
- *SM4 Jat Boy (DOB 01.04.84) 35/5'8" B.A. Avoid Gotras: Loura, Bharman, Sindhu, Deswal, Duhan. Cont.: 9463653724*
- *SM4 Jat Boy 27/5'11" M.A. Economics, JBT. Employed as regular JBT Teacher in Delhi Govt. School. Avoid Gotras: Bhaker, Punia, Kaswan. Cont.: 6239019166, 9780260305*
- *SM4 Jat Boy (DOB15.03.91) 28/5'9" B.Tech. Computer Science, MBA. Working in Software Development Programming since 2012. Now working in MNC Co. as Team Lead Manager with package 30 lakh annual and total family income 50 lakh PA. Preferred working and highly qualified & urban living small family or own house in nearby Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Bheru, Mor. Cont.: 9896618617*
- *SM4 Jat Boy 31/6'3" B.Tech. Computer Science. Working in HCL NOIDA with package 23 lakh PA. Mother lecturer (Rtd.), Three sisters well settled. Well educated family, house in Jind & Gurgaon. Preferred MNC working tall girl. Avoid Gotras: Redhu, Malik. Cont.: 8447665851*
- *SM4 Jat Boy 26/6'1" Polytechnic Electrical Diploma. Working in MNC with package 4 lakh PA. Mother teacher (Rtd.). Brother, sister well settled. Agriculture land in village and residing in city. Preferred tall girl & in service. Avoid Gotras: Mor, Malik, Budhwar. Cont.: 8295865543*
- *SM4 Jat Boy (DOB15.05.89) 30/5'11" B.Tech (E &C), MA Geography, Doing PhD. as JRF. Father Assistant Commissioner CGST, Mother Assistant Professor. Preferred tall beautiful JRF/ NET qualified girl. Avoid Gotras: Ahlawat, Mann, Sangwan. Cont.: 9896190998*
- *SM4 Jat Boy 31/5'6" Four year degree of Hotel Management from Abroad (Europe). Working in private IT Company. Father Govt. retired class-I officer. Own triple storey house at Zirakpur. Six acre agriculture land in village. Avoid Gotras: Nehra, Ghanghas, Dalal. Cont.: 9814312226*
- *SM4 Jat Boy (DOB 28.10.92) 27/5'7" Employed as Assistant Professor (Math) in Govt. College Kalka on regular basis & pursuing Ph.D from P.U. Chandigarh. Father retired from HMT Pinjore. Preferred permanent well settled match in teaching job. Avoid Gotras: Dahiya, Gahlyan, Malik. Cont.: 9466395149*
- *SM4 Jat Boy 32/5'10" B.Tech, MBA, CFA. Employed in MNC at Banglore with 38 lakh package PA. Preferred MBA girl. Avoid Gotras: Mor, Gehlawat. Cont.: 8360609162*
- *SM4 Jat Boy (DOB 02.09.98) 21/6 feet B.Tech. in Computer Science. Avoid Gotras: Nain, Dhimara, Mehla. Cont.: 9991941885, 9416773199*
- *SM4 Jat Boy (DOB 15.05.89) 30/5'11" B.Tech. (E&C), MA Geography, doing PhD. as JRF. Father Assistant Commissioner CGST, Mother Associate Professor. Required tall, beautiful & fair, JRF/NET qualified girl. Avoid Gotras: Ahlawat, Mann, Sangwan. Cont.: 9896190998*
- *SM4 Jat Boy (DOB 22.04.87) 32/5'7" B.Tech. in Electrical & Communications. Employed in MNC. Delhi. Avoid Gotras: Sangroha, Nain, Kaliraman. Cont.: 9466569366, 7015021974*
- *SM4 Jat Boy (DOB 1990) 29/5'6" B.Tech. Working as J. E. in Metro Railway Delhi. Required Govt. job girl. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhall. Cont.: 9467671451*
- *SM4 Jat Boy (DOB 10.03.90) 29/5'11" BSc in H.M. Employed in railways. Settled in Canada. Avoid Gotras: Punia, Sangwan, Sheoran. Cont.: 9888466688*

नोट

ट्राईसिटी में कोरोना महामारी के बचाव के लिये प्रशासन द्वारा लगाये गये लॉक डाऊन व कर्फ्यू के कारण जाट लहर मासिक पत्रिका के 3–4 अकों (मार्च व अप्रैल 2020) का प्रकाशन नहीं किया जा सका। जिसके लिये जाट सभा चण्डीगढ़ अपने सभी आजीवन सदस्यों व जाट लहर पत्रिका के नियमित पाठकों से असुविधा के लिए खेद व्यक्त करती है।

मनुष्य की जिंदगी एक सुंदर पक्षी की भांति है, जो किसी डाल पर बैठा हुआ थोड़ी देर चहचहाता है और फिर उड़ जाता है। –इकबाल

सार्वजनिक अपील

जैसा कि आप सभी को मालूम है कि समस्त विश्व कोरोना वायरस की महामारी के संकट के दौर से गुजर रहा है, जिसने आमजन के स्वास्थ्य के साथ-साथ राष्ट्र की वित्तीय व्यवस्था को भी डांवाडोल कर दिया है। हरियाणा भी इस महामारी से अछूता नहीं हैं, दिन-प्रतिदिन कोरोना से संक्रमित लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह जानलेवा बीमारी लम्बे समय तक चल सकती है।

देश एवं प्रदेश में विकट हालातों के मध्यनजर जाट सभा द्वारा अपने दोनों भवनों :- सैक्टर-27, चण्डीगढ़ जाट भवन तथा सैक्टर-6, पंचकूला में स्थित सर दौटूराम भवन तथा चौधरी छोटूराम सेवा सदन कटरा-जम्मू के 10 कनाल के प्लॉट को कोरोना से संक्रमित मरीजों के ईलाज के लिए संबंधित प्रशासन/सरकारों को सौंप दिया गया है। पंचकूला स्थित सर छोटूराम भवन तो स्वास्थ्य विभाग पंचकूला के उन डाक्टरों की टीम को रहने के लिए दिया गया है जो कोरोना से संक्रमित मरीजों को ईलाज करने में सेवारत है।

जाट सभा पंचकूला/चण्डीगढ़ हमेशा ही समाजसेवा के कार्यों में अग्रणी रहती है। वर्तमान कोरोना की महामारी के संकट को देखते हुए जाट सभा ने पीड़ितों की सहायता के लिए **'हरियाणा कोरोना रिलिफ फंड'** में **1 लाख 11 हजार रुपये** की राशि अनुदान में दी है, यह प्रयास सभी के सहयोग से आगे भी जारी रहेगा। जाट सभा पंचकूला/चण्डीगढ़ के पास इस प्रकार की आपदाओं या महामारी के लिए अपना कोई स्थाई कोष नहीं है और ऐसी परिस्थितियों में आप सभी दानी सज्जनों के सहयोग से वित्तीय अनुदान का प्रबंध किया जाता है।

इसलिए आप सभी से नम्र निवेदन है कि राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक आपदा की इस घड़ी में सार्वजनिक हित को देखते हुए अपनी इच्छा अनुसार भरपूर आर्थिक सहयोग एवं हर संभव सहायता प्रदान करें। इसके साथ ही इस भयंकर बीमारी से बचाव हेतू सरकार द्वारा घोषित कर्फ्यू/लॉकडाऊन व इस संदर्भ में जारी सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करें।

जाट सभा को दी जाने वाली अनुदान राशि 'जाट सभा चण्डीगढ़' कके पक्ष में चैक/डिमांड ड्राफ्ट की मार्फत जाट भवन, 2 बी, सैक्टर-27ए, मध्य मार्ग चण्डीगढ़-160019 में भेजी जा सकती है। इसके अलावा, धनराशि एनएफटी/आरटीजीएस द्वारा जाट सभा चण्डीगढ़ के बचत खाता नम्बर-5010023714552, आईएफएससी कोड - एचडीएफसी 0001321 में सीधे ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा-80 सी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932, 2641127
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।